GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA

Class No. H 943
Book No. SU659

N. L. 38.

MGIPC—S1—36 LNL/60—14-9-61—50,000.

NATIONAL LIBRARY

This book was taken from the Library on the date last stamped. A late fee of 1 anna or 6 nP. will be charged for each day the book is kept beyond a month.

2113

14 OCT 1973

4
5/5/55

N. L. 44.
MGIPC—S8—22 LNL/59—15-6-60—50,000.

संक्षिप्त इतिहासमाला संख्या १.

"इतिहास निज अरु अन्य देशन के रचहु ततकाल" (हिन्दी अपील)

"सर्वं धर्मे प्रतिष्ठितम्"

जर्मनी का इतिहास

पण्डित सोमेश्वरदत्त सुकुल कृत

सम्पादक
पण्डित श्यामविहारी मिश्र एम० ए०
तथा
पण्डित शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०

5128

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, इलाहाबाद
इंडियन पब्लिशिंग हौस, कलकत्ता

सन् १९०८

मूल्य ।

H A
943
Sa 659

LF LISTED

Printed and Published by P. K. Mittra at the Indian Press, Allahabad.

NATIONAL LIBRARY
NO. 9997
DATE 29.6.60
CALCUTTA

विषयानुक्रमणिका।

परिशिष्ट

सम्पादकीय भूमिका।

—:०:—

हमारा बहुत दिनों से विचार था कि यदि हिन्दी में पृथ्वी के सभी मुख्य मुख्य देशों का संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित हो जाता तो देश का बहुत बड़ा उपकार होता और हिन्दी जानने वाले महाशयों का दृष्टि-क्षेत्र बहुत कुछ विस्तृत हो जाता। अवश्य ही हमारे यहाँ इतिहास का एक दम अभाव नहीं है पर इस ओर हमारे लेखकगणों का सदा से बहुत कम ध्यान रहा है ऐसा मानने में कदाचित् कोई भी महाशय विशेष हठ न करेंगे। इसका फल यह हुआ कि केवल संस्कृत एवं हिन्दी जानने वाले अपने देश का भी वृत्तान्त बहुतही कम जान सकते हैं और पृथ्वी के अन्य प्रभावशाली देशों के हाल जानने से वे नितान्त वंचित रह जाते हैं। यहाँ तक कि अधिकांश लोगों को ऐसे देशों के नाम तक नहीं ज्ञात होते! यह दशा कैसी शोचनीय है सो लिखने की विशेष आवश्यकता नहीं। यही कारण है कि हमारे यहाँ के लोग जानते ही नहीं कि किन किन कारणों से देशों एवं राष्ट्रों का अभ्युदय एवं अधःपतन होता है; कौन बातें और रीतियाँ उत्तम एवं कौन निकृष्ट हैं; किस प्रकार के आचार-विचार से देश और जाति को लाभ पहुँच सकता है और किससे हानि ही हानि सम्भव है; किन किन कारणों से किन किन देशों का उद्भव हुआ और उन कारणों को

याथातथ्य अथवा समुचित परिवर्तनों के साथ हम अपने देश एवं जाति में कैसे उपस्थित कर सकते हैं; किस चाल ढाल पर चलने से किन किन देशों एवं जातियों अथवा राष्ट्रों को क्या हानि पहुँची अथवा उनका कैसे ह्रास या सर्वनाश हो गया और हम में वे अथवा वैसीही बुराई की चाल ढालें हैं या नहीं और यदि हैं तो हम उनको कैसे हटा सकते हैं, इत्यादि इत्यादि ऐसे हो सैकड़ों बड़े ही महत्त्व के प्रश्न हैं कि जिन पर ध्यान देने से हमारा हित होगा एवं जिन्हें अलग छोड़ देने से हमारी न जानें क्या क्या दुर्दशा या सर्वनाश तक हो सकता है। ऐसे प्रश्नों पर ध्यान देने की पात्रता हम में तभी आ सकती है जब हम संसार के सभी ऐसे देशों का इतिहास जान लें कि जो आज दिन उच्चदशा में हैं अथवा पूर्वकाल में रहे हैं, एवं जो देश अपनी असावधानी से बिलकुल मिट्टी में मिल गये हैं। कुछ जातियाँ ऐसी भी हैं जो अपनी मूर्खता के कारण इस "असार" संसार से कूच कर बिलकुल निर्मूल हो गईं अथवा ऐसी उत्कट अधोगति को प्राप्त हो गईं कि उनका पुनरुत्थान होना असम्भव हो गया है। ऐसी जातियों का पूर्ण वृत्तान्त जान लेना, उन को त्रुटियों को भली भाँति समझ कर उन पर मनन करना, और अपनी जाति से उन्हें हटाने का पूर्ण प्रयत्न करना प्रत्येक समझदार मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य है। पर केवल हिन्दी जाननेवाले इतिहास-ग्रन्थों के अभाव से इस पवित्र कर्तव्य के पालन करने में नितान्त असमर्थ हैं।

दूर की बात जाने दीजिए। उदाहरणार्थ बेचारे शूद्रों एवं हिन्दुओं की नीचातिनीच जातियों पर ही दृष्टि दीजिए। इस बीसवीं

शताब्दी में ऐसा मानने वाले बहुत न मिलेंगे कि ईश्वर ने ही इन नीच जातियों को सदा के लिए नीच बना दिया है और यह क्रूर आज्ञा दे दी है कि वे दो, चार, छः, दस, बीस, पचास पुश्तों तक नहीं बरन अनन्त काल तक लाखों करोड़ों पीढ़ियाँ बीतने पर भी सदा के लिए नीच ही बने रहें और उन्हें उन्नति करने का कभी अवसर ही न प्राप्त हो। न्यायशील ईश्वर पर ऐसा कलंक लगाना नितान्त अनुचित है। कुछ महाशय कहने लगेंगे कि ईश्वर ने किसी को भी अनन्त काल के लिए नीच बने रहने की आज्ञा नहीं दी है। आत्माओं की नीचातिनीच योनियों से लेकर क्रम से उच्चातिउच्च पद पर स्वकर्मानुसार पहुँचने का उसने यह प्रबन्ध किया है कि अच्छे कर्म करने से भंगी, चमार और हलालख़ोर तक दूसरे जन्म में श्रेष्ठतर जातियों में उत्पन्न हो सकते हैं और इसी भाँति धीरे धीरे उन्नति करते करते ब्राह्मण-योनि तक प्राप्त कर सकते हैं। इसका उत्तर हम यह देते हैं कि इस तर्क के अनुसार ब्राह्मण एवं हिन्दुओं की अन्य उच्च जातियों को भी उन्नति करने की कोई आवश्यकता नहीं; क्योंकि कर्म के ज़ोर से वे दूसरे जन्म में अँगरेज़ों अथवा अन्य प्रभावशाली जातियों (यथा जर्मन, जापानी इत्यादि) में उत्पन्न हो सकते हैं। प्रश्न तो यह है कि हमारी हिन्दू जाति कभी पूर्ण उन्नति करे या नहीं? शायद कोई भी हिन्दू यह न कहेगा कि हिन्दुओं की उन्नति न हो, बरन वे लोग दूसरे जन्म में योरोपियन, जापानी, या अमेरिकन हों। इसी भाँति बेचारी नीच जातियों को भी इसी जन्म में क्यों उन्नति न करना चाहिए? इतिहास से यह

सुप्रमाण सिद्ध हो चुका है कि ये "नीच" जातियाँ पहले यहाँ राज्य करती थीं और हमारे पूर्व पुरुष आर्यों ने तिब्बत के आस पास मध्य एशिया के किसी स्थान से आकर इनपर आक्रमण किया और धीरे धीरे इनका सारा देश विजय कर लिया। तत्पश्चात् इनको पढ़ने एवं उन्नति के अन्य सभी मार्गों से वंचित कर उन्होंने शनैः शनैः इन्हें ऐसा नीचातिनीच बना दिया कि अब इनमें से अधिकांश लोगों की गणना मनुष्यों में करना व्यर्थ है। हमारी समझ में भारत-वर्ष की मनुष्य-गणना में ऐसे मनुष्यों की गिनती करना ही ठीक नहीं और तब जान पड़ेगा कि यहाँ की जन-संख्या जो तीस करोड़ कहलाती है वह एकदम भ्रममूलक और अशुद्ध है। एक तो यहाँ स्त्री-शिक्षा के अभाव से जनसंख्या का अर्द्धांश अलग ही छोड़ देना चाहिए और फिर इन बेचारी पशुवत् जातियों एवं अन्य जातियों के पशुवत् मनुष्यों को गणना के बाहर कर देने से इस देश की आबादी सवा अथवा डेढ़ करोड़ मात्र की रह जावेगी और प्रायः यही संख्या यहाँ के पढ़े लिखे लोगों की है क्योंकि पुरुषों में यहाँ प्रायः ११ सैकड़े एवं स्त्रियों में केवल ·७५ सैकड़े अर्थात् हज़ार पीछे ७½ मात्र की संख्या "त," "म," कर लेनेवाले मनुष्यों की है! शिव! शिव!! भला अंधकार का कहीं पता है!!! अस्तु, यह बेचारी नीचाति-नीच जातियाँ भी क्या अब कभी पूर्ण उन्नति कर सकेंगी? शायद कभी नहीं। शहरों में इतना विशेष अन्तर नहीं जान पड़ता पर गाँवों में आर्य्य-जातियों और अनार्य्यों में मनुष्य और पशु का सा भेद पाया जाता है। शताब्दियों से मार खाते खाते और ज़र्कें उठाते उठाते

नीचातिनीच जातियाँ ऐसी निर्जीव हो गई हैं कि कुछ कहते नहीं बनता। केवल एक ब्राह्मण या क्षत्रिय अगर पचास चमारों को भी साथ ही साथ मार चले तो भी बेचारे चमारों से सिवाय हाय हाय करने और इधर उधर भागने के और कुछ भी न बन पड़े। सो यद्यपि आर्य्य-जाति प्रायः एक हज़ार वर्ष से पददलित और पराधीन हो रही है तो भी उसका दबदबा (Prestige) अब तक नीच जातियों पर कई अंशों में जैसा का तैसा वर्तमान है। हम भली भाँति जानते हैं कि बहुतेरे कट्टर विचारों के लोग यह बातें सुनकर भौं चढ़ाने और कहने लगेंगे कि "इन लेखकों को क्या यही अभीष्ट है कि चमार ब्राह्मणों और ठाकुरों को जूतों पीटें?" इसके उत्तर में हमारा सविनय निवेदन है कि हमारा यह अभीष्ट नहीं; परन्तु हम लोग ही बेचारे चमारों को क्यों सतावें? कदाचित् इसी के बदले, "जो जस करै सो तस फल चाखा" के अनुसार, हम लोगों के साथ भी अन्य देशों की प्रबल जातियाँ क्रूर बर्ताव कर रही हों। ट्रांसवाल, नेटाल, आस्ट्रेलिया इत्यादि अनेक देशों में हम लोगों का क्या सम्मान होता है सो इतिहास एवं समाचार-पत्र-प्रेमियों से छिपा नहीं है। वहाँ हम लोगों के साथ उससे भी नीचतर बर्ताव किया जाता है जैसा हम लोग बेचारे चमारों के साथ करते हैं। सच पूछिए तो इसमें आश्चर्य्य ही क्या है? उदारशील अँगरेज़ी जाति को छोड़ यदि भारतवर्ष पर किसी अन्य ऐसीही प्रबल जाति का अधिकार होता तो कदाचित् कुछ दिनों में हमारी प्राचीन आर्य्य जाति भी धीरे धीरे चमारों की ही दशा को पहुँच जाती। अँगरेज़ों ने हम लोगों

के लिए शिक्षा का विशाल द्वार खोलकर हमें यह अवसर दे दिया है कि हम ऐसी शोचनीय दशा से बचें। पर, जो जाति अपनी उन्नति करने में आप ही चेष्टा न करे उसे कोई भी उच्च नहीं बना सकता। और, इसी कारण, हमारी समझ में, अब भी बहुत सम्भव है कि समस्त हिन्दू जाति की वही दशा हो जावे जो बेचारे कोल, गोंड़, सन्थाल, भंगी, पंचम, कंजड़, चमार इत्यादिकों की आज दिन है और कदाचित् सदा रहेगी। क्या कोई भी कहेगा कि यह नीच जातियाँ अब किसी विचार-कोटि में आनेवाले समय के भीतर संसार की उच्च जातियों के साथ अपना स्थान ले सकेंगी? वैसेही यदि हिन्दू जाति भी सावधान होकर कूपमंडूक वाली बातें एक किनारे रख अपनी उन्नति में इतिहास-सिद्ध उद्योगों द्वारा शीघ्र तत्पर न हो जायगी तो कोई आश्चर्य्य नहीं जो वह किसी दिन इन्हीं नीचातिनीच जातियों के पद को प्राप्त हो जावे!! इस भयावनी दशा से बचने का उपाय यही है कि संसार के इतिहास पर ध्यानपूर्वक मनन कर हम लोग अपनी त्रुटियों और बुराइयों को हटावें और धीरे धीरे वर्त्तमान राम-राज्य में अपनी पूर्ण उन्नति कर लें। इस पवित्र उद्देश्य के फलीभूत होने में यदि यह इतिहास-माला कुछ भी सहायक हुई तो इससे सम्बन्ध रखने वाले हम सभी लोग क्या लेखक, क्या सम्पादक, क्या प्रकाशक, अपने को धन्य मानेंगे।

इतिहास से क्या क्या लाभ होते हैं उनका उल्लेख करने से भूमिका का विस्तार बहुत बढ़ जायगा। संक्षिप्त रूप से ऊपर जो कुछ लिखा जा चुका है उसके अतिरिक्त इतिहास से एक तो मनोरंजन

खूब होता है। दूसरे आदमी का अनुभव बेहद बढ़ जाता है। तीसरे उसे भली भाँति ज्ञात हो जाता है कि मैं जो कुछ अपनेही आसपास देखता रहा हूँ और जिसेही मैं संसार समझता था वह वास्तव में गूलर फल का ही संसार कहा जा सकता है। चौथे उसका अंधकार-जनित अभिमान छूट जाता है। पाँचवें उसका कट्टरपन भी पूर्णतया घिस जाता है; क्योंकि उसे ज्ञात हो जाता है कि संसार की प्रायः सभी जातियाँ अपनेही धर्म एवं विश्वासों को, अपनीही रीति-रवाजों एवं पहिनाव, चाल, ढाल इत्यादि को सदा से सर्वश्रेष्ठ मानती आई हैं और आज तक मानती जाती हैं। यद्यपि यह सम्भव नहीं कि सभी धर्म, विश्वास, रीति या चाल सर्वोत्तम हो सकें, और सम्भव है कि निष्पक्षपात हो कर मनन करने से विदित हो जाय कि हमारी ही सभी बातें संसार भर में सर्वोच्च न ठहरें बरन कुछ अन्य जातियों की शायद सभी, अथवा कम से कम कुछ, बातें हम से श्रेष्ठतर हों। ध्यान रहे कि जैसे हम यह सुन कर चिढ़ सकते हैं कि हमारे आचार, विचार, धर्म, विश्वास, पहिनाव, ओढ़ाव, रस्म, रवाजें सर्वोत्तम नहीं हैं उसी भाँति अन्य जातियों के कट्टर और अनुभवशून्य लोग भी यह सुन कर जामे बाहर हो सकते हैं कि संसार में किसी जाति की रीतियाँ उनसे उत्तमतर हैं! जैसे हम अन्य जातियों को नापाक और पतित समझते हैं वैसेही बहुतेरी उच्च जातियाँ हमें नीच, घृणित, अर्द्धासभ्य कहती हैं। जैसे हम अन्य जातियों का छुवा हुआ भोजन नहीं खाते वैसेही कुछ अन्य जातियाँ हमें छू जाने तक में अपना परम अपमान समझती हैं।

जैसे हम जानते हैं कि लड़कों के कान नाक छेद, उनमें सोने की बालियाँ डाल देना, तथा उनके हाथ पैरों में चाँदी की बेड़ियाँ पिन्हाना, परमावश्यक है वैसेही कुछ अन्य सभ्य कहाने वाली जातियाँ अपने अंग गोदना, पैर छोटे करने के लिए स्त्रियों को बचपन से ही पीतल के जूते पहना कर लुंजो कर देना और ऐसेही अनेक हास्यास्पद रवाजों का प्रचलित रखना सभ्यता की सामग्री समझती हैं। निदान कहाँ तक लिखें, इतिहास पढ़ने से अनेकानेक लाभ हैं और इसका अधिकाधिक प्रचार करना प्रत्येक देश और जातिहितैषी का पवित्र कर्तव्य है। हमारी समझ में यदि हिन्दी-पठित समाज का दशमांश भी पृथ्वी के प्रभावशाली देशों का इतिहास जान ले तो इस अभागे देश, और इस बृहद् एवं किसी समय में परमोच्च, परन्तु अब अधोगति-प्राप्त, प्राचीन और पवित्र आर्य्य (हिन्दू) जाति, का पूर्ण उपकार और पुनरुत्थान होना अब भी सम्भव है। नहीं तो ऐसी महत्त्व-मय और परमविस्तृत जाति का अँगरेज़ी राम-राज्य में भी न जानें कैसा बुरा हाल अथवा सर्वनाश तक हो जाना कोई आश्चर्य्य की बात नहीं!

इस इतिहास-माला में निम्न लिखित देशों का हाल लिखा जायगा :—

१ भारतवर्ष (हिन्दुस्तान)।
२ मिसर अर्थात् इजिप्ट।
३ ग्रीस अर्थात् यूनान।
४ इटली अर्थात् रोमन प्रदेश।
५ चीन।
६ टरकी।
७ फ़ारस, अरब, व अफ़ग़ानिस्तान।
८ अफ़रीक़ा के राज्य तथा अस्ट्रेलिया।

९ स्पेन।
१० पुर्तगाल।
११ हालैंड, डेन्मार्क व स्विट्ज़रलैंड।
१२ आस्ट्रिया।
१३ स्वीडेन ग्रौर नारवे।
१४ इंगलैंड अर्थात् ग्रेटब्रिटन।
१५ जापान।
१६ जर्मनी।
१७ रूस अर्थात् रशिया।
१८ संयुक्तरियासतें-अमेरिका।
१९ फ़्रांस अर्थात् फ़रासीस।
२० पृथ्वी के अन्य देश।

ये पुस्तकें ऊपर लिखे अथवा किसी क्रम विशेष से नहीं प्रकाशित होंगी बरन सुभीते के अनुसार निकलती रहेंगी। ऊपर की सूची में नम्बर इस हिसाब से लगाये गये हैं कि नं० १—५ तक वह देश हैं जिन की सभ्यता ग्रौर उन्नत दशा किसी समय में बहुत बढ़ी चढ़ी थी परन्तु अब सिवाय नं० ४ के ग्रौर सभी का बुरा हाल है, ग्रौर नं० ४ की दशा भी पहले के देखते अब बहुत मन्द है। नं० ६ से १३ तक के देशों की सभ्यता वैसी प्राचीन नहीं पर बीच में उन की भी अच्छी उन्नति हुई थी ग्रौर कतिपय अब भी भली चंगी दशा में हैं। नं० १४—१९ के देश इस समय पूर्ण प्रतिभाशाली हैं एवं नं० २० में पृथ्वी के उन शेष देशों का हाल लिखा जायगा जिन्होंने संसार के इतिहास में कभी कुछ भी योग दिया है।

हरदोई,
१२।४।०८।

श्यामविहारी मिश्र,
शुकदेवविहारी मिश्र।

हमारा वक्तव्य ।

—:०:—

बड़े हर्ष की बात है कि आज इस इतिहास-माला का एक 'कुसुम' लेकर हमें अपने उदार पाठकों के सम्मुख उपस्थित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। चाहे इस कुसुम में सुगन्ध कमती ही हो, किंतु एक छोटे का प्रेमोपहार समझ कर, हमें विश्वास है, कि सहृदय पाठकवृन्द इसे सादर ग्रहण करके हमारा उत्साह बढ़ावेंगे, जिससे कि हम अन्यान्य उत्तम उत्तम कुसुम संग्रह कर उनके सुविशाल गले में डालने योग्य 'माला' तैयार कर सकें। यह हमें अज्ञात नहीं है कि इस छोटीसी पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ रह गई हैं; क्योंकि हिन्दीरसिकों की सेवा में यह हमारा पहला ही उपहार है; तथापि हमें पूर्ण आशा है कि इस 'क्षुद्रोपहार' को कृपया अपनाकर भविष्य में भी सेवा करने के लिए आप हमें उत्तेजित करेंगे। हमें इस पुस्तक के तैयार करने में (१) एन्साइक्लोपीडिया ब्रितानिका, (२) हिस्टोरियंस हिस्ट्री आव् दि वर्ल्ड (३) स्टोरी आव् दि नेशन्स सीरीज़ में की मिस्टर गाउल्ड लिखित जर्मन-इतिहास से विशेष सहायता मिली है। अतएव उनके लेखक और प्रकाशकवृन्द को हम यहां पर हार्दिक धन्यवाद देते हैं। इस स्थान पर हम इंडियन प्रेस के स्वामी बाबू चिन्तामणि

घोष एवं प्रिंटर और प्रकाशक महाशयों को भी हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस इतिहासमाला की इस प्रथम पुस्तक के प्रस्तुत करने में अपने उत्साह और हिन्दी प्रेम का पूरा परिचय दिया है।

किसी समय हमारा देश समस्त संसार का शिरोमणि था। शोक! आज उसकी कुछ और हो दशा है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक बा० हरिश्चन्द्र ने अपने एक नाटक में भारतवर्ष के प्राचीन गौरवांश को बड़ी उत्तमता से एक चौपाई में वर्णित किया है। वह यह हैः—

"फ़िनिक मिसिर सीरीय युनाना।
भे पण्डित लै भारत ज्ञाना"॥

कैसे सारगर्भित शब्द हैं। वास्तव में किसी समय हिन्दुस्तान में यही योग्यता थी कि लोग इसे आदर्श मान कर इससे शिक्षा ग्रहण करते थे। परन्तु अब वह दिन न जानें कहाँ चले गये। मर्य्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी, भीष्म, द्रोण, अर्जुन, कालिदास महारानी लक्ष्मी बाई आदि की प्रसविनी वीरसिंहिनी यह भारत-भूमि आरत होकर निर्जन वन में फूट फूट कर रोरही है। इसी कारण इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि आधुनिक शूरवीरों के विक्रमोदाहरण वीरप्रसविनी के समक्ष रक्खे जावें, जिनके द्वारा इसे मालूम हो कि ये नये नये देश कैसी उन्नति कर रहे हैं, तो क्या स्वयं इसे, जो किसी समय में संसार की आदर्श थी, फिर अपने खोये हुए गौरव को हस्तगत कर लेने में कोई सन्देह है। जर्मनी भी कैसा प्रभावशाली देश है और उसमें समयोचित कैसी कैसी उन्नतियां हुई हैं इस बात का दिग्दर्शन इस छोटे ग्रन्थ के अवलोकन करने से हो जायगा। जहाँ शार्लमेन के समान

आदर्श महाराज, बिस्मार्क से राजनीतिज्ञ, ब्लूचर सदृश योद्धा, ल्यूथर के समान धार्मिक संशोधक; हेगेल, कैंट, लाज़े के तुल्य दार्शनिक; गेटी सरीखे सुकवि और मैरिया थेरेसा ऐसी उदरशीला महिला होगई हैं, ऐसे प्रतिभावान् जर्मन देश के इतिहास को ध्यान-पूर्वक पढ़ कर हम लोग अवश्यमेव शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

प्रत्येक देश की उन्नति को पूर्णतया समझने के लिए, हमारे वास्ते चार पहलुवों को ध्यान में रखना बड़ा आवश्यक है। (१) शिक्षा, (२) वाणिज्य, (३) शासन-नीति, (४) धर्म और रिवाज। यही चार उन्नति के विभाग हैं। यें देशोन्नति होने के समय अपने किसी न किसी वैकासिक रूप—(Evolutionary Aspect) आरम्भिक, प्रवृद्ध, अथवा उत्कृष्ट में वर्तमान रहते हैं और राष्ट्र के चढ़ाव उतार को नियमित करने में पूरा काम देते हैं। इन्हीं पर देश का उत्कर्ष निर्भर है। जर्मन-इतिहास को मनन करते समय इस 'पादचतुष्टय' को सदा लक्ष्य करके ग्रन्थावलोकन से पूरा लाभ हो सकेगा। इस भाँति पढ़ने से हम उस देश की अवस्था और अपने यहाँ की दशा का पूरा तारतम्य जान सकेंगे और उपयोगी विषयों को यहाँ व्यवहृत करने में सफलमनोरथ होंगे।

प्रथम जर्मनी में विद्या-प्रचार का विषय लीजिए। पाँचवीं शताब्दी तक सिवाय धर्म और प्रेम-गीतों के यहाँ शिक्षा का नाम तक न था। ईसाई मत का प्रचार होने पर उन लोगों ने गिर्जाघरों में पाठालय खोलना शुरू किया। शार्लमेन (७६८—८१४) ने अनेकानेक पाठशालायें खोलीं और ख़ूब शिक्षा का प्रचार किया। १२वीं शताब्दी तक इस विषय में थोड़ी बहुत उन्नति होती रही।

तदनन्तर १३, १४, १५ वीं सदी से शिक्षा का वास्तविक उद्गार आरम्भ हुआ। इस समय बुलफ्रम इत्यादि अनेक कवि वर्त्तमान थे। इसके बाद ही ल्यूथर (१४८३—१५४६) की प्रभावशाली धर्मचर्चा शुरू हुई। अनेक विद्वानों ने उसके सिद्धान्तों के छन्द बनाना प्रारम्भ किया। यही समय दार्शनिक गवेषणा के आरम्भ का है। तदनन्तर १७ वीं सदी में लैबूनिज़ और बुल्फ़ आदि अनेक दार्शनिक हो गये हैं। १८ वीं शताब्दी में शिक्षा की अव्याहत उन्नति होती रही और काल्पस्टक, हर्डर, गेटी ऐसे सुकवि तथा कैंट और शापनहवर सरीखे दार्शनिक इसी काल में हुए हैं। यहां पर यह शताब्दी साहित्योत्कर्ष के लिए प्रसिद्ध है। फ़्रेडरिक दि ग्रेट ने प्रशिया में ख़ूब विद्या का प्रचार किया। यहां के विश्वविद्यालय प्रायः १३ वीं सदी के आरम्भ से स्थापित होने लगे थे। १९ वीं शताब्दी में जितनी विद्योन्नति इस देश में हो गई है, शायद ही उतनी कहीं देखने में आवे। आज कल यहां बड़े २ सुकवि, लेखक, विद्वान्, वेदान्ती और दार्शनिक विद्यमान हैं।

वाणिज्य का मामला देखते ही स्पष्ट मालूम हो जावेगा कि शार्लमेन ही ने इस विभाग का सूत्रपात किया। १२ वीं सदी में व्यापार की इतनी उन्नति हो गई थी कि इसे पुष्ट करने के लिए शहरों में सभायें स्थापित होने लगी थीं। इसके बाद ३-४ सौ वर्ष तक धीरे धीरे तरक़्क़ी होती रही। १६ वीं शताब्दी में व्यापार बड़ी उत्तम दशा में था, किन्तु तीस वर्ष के प्रचण्ड संग्राम (१६१८—४८) और फिर फ़्रांस देशीय घोर विप्लव से (१७८८—

१८१५) वाणिज्य को बड़ा आघात पहुँचा। उक्त विप्लव के समय में भी प्रशिया में फ्रेडरिक दि ग्रेट (१७४०—८०) के होने से कोई विशेष हानि न होसकी। इन झोंकों से बच कर व्यापारी लोगों ने अपने काम के जारी रखने में कुछ भी त्रुटि न की और १८६२ में बिस्मार्क के उत्तम उत्तम संशोधनों से सहायता पाकर वाणिज्य दिनों दिन उन्नति को प्राप्त होता गया। यह समस्या हम सब के ध्यान देने योग्य है। इस समय जर्मनी के वाणिज्य का दर्जा खूब बढ़ा चढ़ा है और Made in Germany (जर्मनी में बना) यह छाप सभी प्रकार के माल पर अंकित देख पड़ती है जिससे अन्य उन्नति-शील देशों के आँख कान खुल गये।

शासन-नीति-सम्बन्धी विषय देशोन्नति का मुख्य अंग है। स्वत्व प्राप्त होने से प्रजा देशोद्धार कर सकती है, अन्यथा आशा दुराशा मात्र है। जर्मनी का शासन-संगठन प्राचीन कालही से विलक्षण है। यहां तभी से पूर्ण प्रजासत्तात्मक शासन होता आया है। ५ वीं शताब्दी में राजा लोगों ने कुछ अपना बल बढ़ा के प्रजा के अधिकार को परिमित करना शुरू किया। शार्लमेन ने इस पर और भी ज़ोर दिया, तथापि प्रजाशासन में योग देने से वंचित नहीं रक्खी जाती थी। तदनन्तर रोज़ रोज़ राज-बल घटता गया और प्रजा ज़ोर पकड़ती गई। स्वत्व प्राप्त करने के लिए प्रयत्न होता रहा, जिसका फल यह हुआ कि चार्ल्स चतुर्थ (१३४७—७८) को मजबूर करके लोगों ने गोल्डेन-बुल नामक इक़रारनामा लिखा ही लिया। १८ वीं शताब्दी तक ये लोग स्वतंत्रता के लिए घोर प्रयत्न करते चले आये। इधर

फ़्रांस-देशीय विप्लव ने भी इन्हें बहुत कुछ उत्साह प्रदान किया। यही कारण था कि १९ वीं शताब्दी में प्रायः सब प्रजा-कृत आन्दोलन एवं विप्लव, भयंकर और प्रबल थे। परिणाम यह हुआ कि नये शासन-संगठन के विचारे जाने के समय इन लोगों के लिए भी महासभा में स्थान दिया गया। सर्व साधारण की प्रतिनिधि सभा का नाम राइस्टग (Reichstag) है। बिना इसकी मंज़ूरी के कोई ख़ास शासन-सम्बन्धी कार्रवाई नहीं हो सकती। ऐसे ही प्रयत्न करते करते जर्मनी को शासन में योग देने का अधिकार मिल गया।

धर्म की दशा यहाँ बड़ी अद्भुत रही है। ईसाई मत का प्रचार होने पर छठी शताब्दी में रोम के पोप ने अपने प्रबल हाथ पैर फैलाना शुरू किये और वह केवल प्रजा पर दबाव न डालकर महाराजकीय बल को ग्रास कर जाने के लिए प्रयत्न सोचने लगे। १५वीं सदी तक पोप का पूरा मानदान रहा। परन्तु अब जर्मन लोगों में देश-प्रेम पैदा हो जाने और मार्टिन ल्यूथर की ओजस्विनी शिक्षा के कारण 'पोप' धीरे धीरे श्रद्धापतित होने लगे और कुछ काल बादही पोपप्रभाव ने अस्ताचल की ओर गमन करना प्रारम्भ कर दिया। हसाइट-संग्राम और ३० वर्ष वाले युद्ध से स्पष्ट प्रतीत होता है कि नये सम्प्रदाय और पोप-पन्थ में हटते दम तक कितना भयानक झगड़ा हुआ। १६४८ में 'धार्मिक सहिष्णुता' (Religious Toleration) का स्वीकार-पत्र हुआ। परन्तु सहिष्णुता की मात्रा स्वयमेव इतनी बढ़ गई है कि अब 'देश-प्रेम' एक मात्र सर्वमान्य धर्म हो रहा है। जर्मनी की सामाजिक रस्में भी उसकी

उन्नति की ख़ूब सहायक हो रही हैं। उन्नति में बाधा डालनेवाली रस्में वहां प्रायः एक भी नहीं हैं।

इस छोटी सी भूमिका में सब बातों का उल्लेख पूरे तौर से नहीं हो सकता। ऊपर लिखी हुई बातों को सोचने विचारने से हम लोग अच्छी शिक्षा ले सकते हैं। शार्लमेन और मैक्समिलान प्रथम के राजत्वकाल, बिस्मार्क के संशोधन, ल्यूथर की निर्भयता और सत्यप्रियता तथा १९ वीं सदी के उत्साह भरे आन्दोलन ध्यान से पढ़ने योग्य हैं। सब बातों से यह परिणाम निकलेगा कि 'प्रयत्न करते जाओ, हताश न हो, उद्देश्य अवश्य सिद्ध होगा'।

आशा है कि कुछ ही दिनों में फ़्रांस देश का इतिहास हम अपने उदार पाठकों की भेंट कर सकेंगे। इसी भाँति सब देशों के इतिहास क्रमशः प्रस्तुत होते रहेंगे। यदि हमारे कृपालु पाठक इस ग्रन्थ अथवा भविष्य में तैयार होने वाली पुस्तकों को उत्तम बनाने वाले प्रस्ताव हमारे या सम्पादकों के पास लिख भेजेंगे, तो हम लोग धन्यवाद-सहित उन्हें स्वीकार करेंगे। तदनन्तर उन्हीं प्रस्तावों के अनुकूल यह कुल ग्रन्थावलि प्रस्तुत करने का उद्योग करेंगे। यदि ऐसी ऐसी उत्तम अँगरेज़ी, नागरी, बँगला, अथवा मराठी पुस्तकों के नाम, जिनके द्वारा भविष्य में हमें किसी देश-विशेष (मुख्यतया भारतवर्ष) का इतिहास तैयार करने में सहायता मिले, हमारे दयालु पाठक लिखते रहें, तो हम इस दया के लिए उनके अत्यन्त अनुगृहीत होंगे।

सीतापुर, अवध.
११ वैशाख कृष्ण १९६५ वि०
सोमवार २७-४-१९०८ ईस्वी

विनीत,
सोमेश्वरदत्त सुकुल,

जर्मनी का इतिहास।

१—भौगोलिक वृत्तान्त।

योरोप देश के मध्य वाले बड़े भाग में जर्मन महा-राज्य फैला हुआ है। इसके तथा पड़ोस की रियासतों के बीच कोई भी प्राकृत सीमा नहीं है। इसका क्षेत्रफल २०८ ४२७ वर्ग मील है। यह देश कुल योरोप का अठारहवाँ हिस्सा है और हमारे बंगाल और बरार के सम्मिलित क्षेत्रफल के प्रायः बराबर है। इसके पूर्व-दक्षिण कोण तथा दक्षिण में आस्ट्रिया और स्विटज़रलैंड, दक्षिण-पश्चिम में फ्रांस, पश्चिम में लक्सेम्बर्ग, बेल्जियम, हालैंड और उत्तर में रूस तथा बाल्टिक सागर हैं।

जर्मनी का उत्तर वाला भाग समथर और दक्षिण का ऊँचा नीचा है। दक्षिण में पहाड़ आदि होने के कारण जल-वायु अच्छा है। राइन तथा और अनेक नदियाँ इस भाग को उपजाऊ बनाती हैं। उत्तर भाग में दलदल बहुत है। यहाँ का जल वायु ख़राब है और अन्न की पैदावार भी अच्छी नहीं है।

आल्प्स नामक पर्वत-श्रेणी का बड़ा अंश बवेरिया प्रदेश में फैला हुआ है। दक्षिण के कई एक सूबों में अनेक छोटे बड़े पर्वत हैं।

समस्त जर्मनी में ९ मुख्य नद-प्रवाह हैं। विस्टूला, ओडर, एल्ब, वेज़र, राइन, डैन्यूब आदि मुख्य नदियाँ हैं। यहाँ की अनेक नदियाँ या तो बाहर से आकर इस महा-राज्य में समाप्त होती हैं अथवा यहाँ से निकल कर बाहर जा गिरती हैं। राइन नदी में जहाज़ सर्वदा चलाये जा सकते हैं।

यहाँ भिन्न भिन्न सूबों में भिन्न भिन्न प्रकार का जल-वायु है। वर्षा अस्थिर रहती है और बवेरिया में बहुत पानी बरसता है। जर्मनी का एक चौथाई हिस्सा जंगल है। दक्षिण तथा पश्चिम में गेहूँ अच्छा होता है। आलू बहुत बोया जाता है। वह केवल खाने ही में नहीं ख़र्च होता बरन उससे एक प्रकार की शराब भी तैयार करते हैं। शक्कर बनाने के लिए यहाँ चुक़न्दर की खेती होती है और इस काम के लिए अनेक कारख़ाने भी हैं। तम्बाकू की भी खेती यहाँ होती है। केवल पश्चिम और दक्षिण जर्मनी में अंगूर होता है। खनिज पदार्थों की उपज यहाँ अच्छी है। इस विषय में यह देश इँगलैंड से कम, परन्तु फ़्रांस और अमेरिका के संयुक्त-राज्यों के समान, है।

यह राज्य २६ हिस्सों में विभक्त है जिनमें ४ रियासतें, छः बड़े ताल्लुक़े पांच ताल्लुक़े, सात छोटे ताल्लुक़े, तीन स्वतंत्र नगर, एवं एक राजकीय सूबा है। उनका ब्यौरा इस प्रकार है :—

(१) रियासतें

१. प्रशिया, पूर्व से पश्चिम तक मध्य भाग में।

२. बवेरिया, दक्षिण में।

३. सैक्सनी, पूर्व-दक्षिण में।

४. वर्टेम्बर्ग, दक्षिण में।

(२) बड़े तअल्लुके (Grand Duchies)

१. बेडेन, दक्षिण में।

२. हेसे, दक्षिण में।

३. मेक्लेनबर्ग-शिवेरन, उत्तर में।

४. मेक्लनबर्ग-स्ट्रेलिज़, उत्तर में।

५. ओल्डेनबर्ग, उत्तर में।

६. सेक्सवेमर, प्रशिया के पूर्व दक्षिण में।

(३) तअल्लुके (Duchies)

१. ब्रंज़विक।

२. सेक्समेनिंगेन।

३. सेक्स-अल्टेनबर्ग।

४. सेक्सकोबर्ग-गोथा।

५. अनहाल्ट।

(४) छोटे तअल्लुके (Principalities)

१. श्वार्ज़बर्ग-रुडल्स्टड।

२. श्वार्ज़बर्ग-ज़ाण्डर्स-हाउज़न।

३. वाल्डेक।

४. रेइस-ग्राइज़।

५. रेइस-गेरां।

६. स्कैम्बर्ग-लिपे।

७. लिपे (Lippe)

(५) स्वतन्त्र नगर (Free Towns)

१. ल्यूबेक।

२. ब्रेमेन।

३. हैम्बर्ग।

(६) राजकीय सूबा

१. अल्सेस-लोरेन ।

इस प्रकार ये सब मिलाकर जर्मनी के २६ हिस्से हैं ।

जर्मनी की राजधानी बरलिन नगर में है । यहाँ के राजकीय पुस्तकालय में आठ लाख पुस्तकें हैं । ब्रेसला, मंस्टर, म्यूनिच, लिपज़िग, स्टटगर्ट आदि जर्मनी के मुख्य नगरों में से हैं ।

विश्वविद्यालय—गवर्नमेंट स्वयं शिक्षा-विभाग में बहुत कुछ व्यय करती है । योरोप देशीय अनेक संस्कृत के विद्वान् इसी देश के हैं । अनेक खोई हुई संस्कृत की पुस्तकों को प्रकाश करके जर्मन लोगों ने बड़ा काम किया है । जर्मनी के विश्वविद्यालय बहुत प्राचीन काल से चले आ रहे हैं । हरएक बड़े सूबे में एक विश्व-विद्यालय है । उन सब की संख्या २१ है । बरलिन, कूनिग्सवर्ग, ब्रेसला, गार्टिंगेन, बोन, हाल (Halle), ग्रिक्सवल्ड, मारबर्ग, मंस्टर, कील, म्यूनिच, वर्ज़बर्ग, एर्लंगेन, लिपज़िग, ट्यूबिंगेन, हिडेलबर्ग, फ्रीबर्ग, गेसां (Giessen) रास्टक तथा जेना और अल्सेस लोरेन में सब मिला के २१ विश्वविद्यालय हैं ।

—:०:—

२—प्राचीन जर्मन लोग ।

(११३ बी० सी०*—५५ बी० सी०)

ईसा के जन्म के ११३ वर्ष पूर्व स्विट्ज़रलैंड की घाटियों के

* बी० सी का अर्थ यह है कि अमुक घटना ईसा के जन्म के इतने वर्ष पहले हुई ।

रहने वाले जङ्गली मनुष्यों ने इटली आदि देशों पर आक्रमण करना आरंभ कर दिया था। ये लोग भिन्न भाषा बोलने वाली दो जातियों के थे। इनमें से एक दल ट्यूटन तथा दूसरा किम्बरी से सम्बन्ध रखता था। ये लम्बे और पुष्ट थे। इनके बाल लम्बे और घने तथा नेत्र नीले थे। इन लोगों की संख्या जितनी अधिक होती गई उतना ही 'इटली' देश की ओर ये लोग बढ़ते चले आये।

इनके विरुद्ध रोमन लोगों ने अनेक सेनायें भेजीं परन्तु हार ही होती रही। ये लोग गाँव, नगर, मैदानों पर धावा मारते थे। ख़ूब लूटते, आग लगाते और तमाम देश का सत्यानाश कर रहे थे। सो रोमन लोगों ने विशेष रूप से सेना इकट्ठा करना प्रारंभ किया। अन्त में रोमन सेनापति मारियस ने इन्हें 'ए' (Aix) की लड़ाई में पूरे तौर से हरा दिया। ट्यूटन लोग जी तोड़ लड़े। उनके हारने पर किम्बरी लोगों ने छापा मारा। परन्तु १०२ बी० सी० में मारियस ने इन्हें भी पराजित किया।

धीरे धीरे ये लोग जर्मनी की ओर बढ़े। यहाँ पर ज्यादा विरोध न होने के कारण ट्यूटन तथा किम्बरी लोगों ने बसना आरंभ किया। पहले यहाँ पर जंगल ही जंगल था। आबादी बढ़ने के साथ साथ जंगल साफ़ होता गया। स्लाव् लोग यहाँ के आदिम बासी थे। इनको जीत कर ट्यूटन आदि जातियों ने अपना आधिपत्य स्थापित किया। शनैः शनैः ये अनेक जातियों में बँट गये, जिन में से चेटी, सैक्सन, ऐंगल्स, स्वाबियन, गाथ, वैंडल इत्यादि मुख्य थीं। उत्तर और दक्षिण के वासियों में इस समय बड़ा अन्तर

था। दक्षिण के लोग अब भी लूट मार में पड़े थे पर उत्तरीय लोगों ने स्थायी रूप से वास करके खेती का धन्धा करना शुरू किया।

अब इन जर्मन-वासियों के दो भाग हो गये। उनमें से कुछ तो स्वतन्त्र और कुछ क्रीतदास (Slave) थे। केवल स्वतन्त्र दल के लोग अस्त्र बाँध सकते थे और उस समय के शासन में इनका अधिकार था। ये विजित जाति स्लाव लोगों के साथ व्याह-शादी कदापि नहीं कर सकते थे। 'स्वतन्त्र' लोगों के मुखिया अपने नौकरों को लेकर अलग गावों में रहते थे। ये अपने क्रीतदासों के साथ उत्तम बर्ताव करते थे। ऐसे ही एक गाँव-समूह का नाम "हंड्रेड" (ग्राम-शती) पड़ा। प्रत्येक गाँव के मुखिया का निर्वाचन स्वतन्त्र दल वाले करते थे और उनमें के कुछ मुख्य लोग एक "हंड्रेड" पर शासन करते थे। बहुत जातियों पर बहुधा एक राजा भी होता था। मुखिया लोगों को शक्ति परिमित होती थी; क्योंकि जर्मन-वासियों में 'सार्वजनिक शासन' का बीज पहिले ही से वर्तमान था। सर्व साधारण की सभा-सम्मति से सब मामले तै किये जाते थे। प्रत्येक युवक लड़ाई में वीरता दिखाने को सर्वदा उत्साहित रहता था। ये लोग युद्ध देव (Woden) की पूजा करते और शकुन मानते थे।

—:०:—

३—विदेशियों के आक्रमण और वीर हेरमन।

(५५ बी० सी०—४८० ईस्वी)

'ए' युद्ध के ५० वर्ष बाद सुप्रसिद्ध जूलियस सीज़र ने जर्मनी पर हमला किया। कुछ काल बाद ड्रूसस और टाइबेरियस ने बहुत सा अंश अपने हाथ में कर लिया।

वर्तमान 'हैनोवर' नामक सूबे में 'चेरस्की' जाति रहती थी। जीतने के उपरान्त, रोमन लोग, उस जाति के मुख्य सेनापति वीर हेरमन को अपने साथ पकड़ ले गये थे। इस कारण कुछ काल तक उसे इटली देश में रहना पड़ा। वहाँ पर युद्ध-शास्त्र को उसने ख़ूब मन लगाकर पढ़ा और अपने देश की शुभ कामना में तत्पर हुआ। उसे यह दृढ़ विश्वास हो गया कि ऐक्य पैदा करने से मेरी जाति का उद्धार अवश्यमेव होगा। सन् ९ ईस्वी में हेरमन जर्मनी लौट आया। इसने अपनी जाति को युद्ध में ख़ूब निपुण किया। कुछ काल बाद ये लोग रोमवासियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए और उन को हरा कर अपने देश को विदेशियों के पंजे से छुड़ा लिया। रोमन लोगों के सैनिक और पदाधिकारी सब लोग व्याकुल होकर इटली भाग गये और इटली का अब नाम मात्र अधिकार जर्मनी में रह गया। जर्मन इतिहास में 'वीर हेरमन' स्वदेश का उद्धारकर्ता आज तक विख्यात है।

चौथी शताब्दी में 'हन' जातीय जङ्गली लुटेरों ने जर्मनी पर धावा किया। ये लोग उत्तरीय एशिया के रहनेवाले थे। अन्त में बहुत सेना एकत्र करके ४५३ ईस्वी में जर्मन लोगों ने इन्हें पूरे तौर से हरा दिया। विदेशियों के आक्रमण से बहुत पीड़ित होकर, अब जर्मनी के वासियों ने अपने अपने संगठित दल बनाने की आवश्यकता का अनुभव किया। अतएव (१) अलूमेनी, (२) फ्रैङ्क, (३) सैक्सन, (४) गाथ, इन चार बड़े दलों में ये लोग बँट गये। सैक्सन लोग 'ग्रेटब्रिटेन' की ओर चले गये और शेष तीन जातियाँ

जर्मनी में रहने लगीं। अपने शासन के सुविधा के हिसाब से ये अपने राजा नियत करते थे। स्मरण रहे कि यह थोकबन्दी हिन्दुओं के जाति-भेद की भाँति कदापि न थी।

—:०:—

४–फ्रैङ्क और मेरोविंजियन वंश।

(४८१—७६८)

सन् ४८१ ईसवी में फ्रैङ्क जातिवालों ने क्लोविस अथवा लडविग को अपना राजा बनाया। इसने रोमन लोगों को अपने राज्य के बाहर निकाल दिया और उनके गिर्जाघरों (चर्च) पर दख़ल कर लिया। उसने बर्गंडी के राजा की भतीजी के साथ विवाह किया। बाद को कुछ कारणों से इन घरानों में लड़ाई हो गई। पर लडविग की जीत रही और बर्गंडी को अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। अल्मेनी दल के लोगों पर भी इसने अपना अधिकार जमाया। लडविग की पत्नी पहले ही से ईसाई हो चुकी थी। कुछ काल के बाद इसने भी अपनी तीन हज़ार प्रजा के साथ वही धर्म स्वीकार किया। प्रायः सब वर्तमान दल इस समय क्लोविस के शासन में थे। सन् ५११ में इसकी मृत्यु होने पर राज्य इसके ४ पुत्रों में विभक्त हुवा। लडविग के उत्तराधिकारी, जो बाद को 'मेरोविंजियन' कहलाये, बड़े निर्बल राजे थे। वे बड़े आराम-तलब थे। अपने राज्य कार्य्य की ज़रा भी परवा नहीं करते थे। राजा को असमर्थ देख कर नगराध्यक्ष (मेयर्स आफ दि पैलेस) लोग वास्तव में राज्य करने लगे।

इन लोगों में 'पेपिन' नामक नगराध्यक्ष बड़ा चतुर था। अपनी योग्यता के कारण सब राज्यशासन इसने अपनेही हाथों में लेलिया।

लड़ाइयों में भी इसने योग देना आरम्भ किया। बाद को इसका पोता 'पेपिन दि शार्ट' राज्याधिकारी हुआ। अब रोम के पोप ने इस राज्य में हस्तक्षेप करना शुरू किया। पोप तथा और लोगों की सम्मति से 'पेपिन दि शार्ट' का ही निर्वाचन राज्यासन के लिए हुआ। पोप की कृपा के कारण, यह राजा उसकी बड़ी ख़ातिर करता था और इसी समय से जर्मनी में पोप का प्रभाव ज़्यादा होने लगा। 'पेपिन' का देहान्त होने पर उसके पुत्र जगद्विख्यात 'शार्लमेन' ने ७६८ ईसवी में राज्य सिंहासन को सुशोभित किया।

छठी और सातवीं शताब्दी में आयर्लैंड के महन्तों ने ईसाई धर्म का प्रचार करना आरम्भ किया। इंग्लैंड पार करके अपनी छोटी छोटी नावों द्वारा ये जर्मनी में आ पहुंचे, और व्याख्यान देना शुरू किया। पहले पहल अलमेनी और फ्रैंक लोगों ने यह मत स्वीकार किया। कुछ काल के बाद अनेकानेक महन्त इंग्लैंड से आने लगे और यह धर्म दिन प्रति दिन उन्नति को प्राप्त होता गया। अब अनेक गिर्जाघर यहां बन गये और हज़ारों आदमी ईसाई हो रहे थे।

५–शार्लमेन अथवा चार्ल्स दि ग्रेट।

(७६८—८१४)

अपने समय के अत्यन्त महान् और सुयोग्य राजा शार्लमेन ने अब राज्यभार अपने हाथ में लिया। इस महाराज से अद्यापि जर्मनी देश की ही नहीं, वरन सारे योरोप की शोभा बढ़ रही है। यह प्रथम कक्षा का राजनीतिज्ञ, व्यवस्थाकार और साहित्य-प्रेमी था। अपने ४५ वर्ष के राजत्व काल में इसने कुल ५३ लड़ाइयों में योग

दिया। इसका राज्य बड़ा विस्तृत था। प्रायः सब जर्मनी, बेल्जियम, फ्रांस, स्विट्ज़रलैंड, उत्तरीय इटली तथा स्पेन इसीके अधीन थे। अनेक जातियों पर समान दृष्टि रख कर उत्तम शासन करने में इसकी उत्कृष्ट योग्यता का परिचय मिलता था।

सामन्त राज्य, बड़े ताल्लुक़े, ताल्लुक़े, तथा सूबों में इसने अपने बड़े राज्य को विभक्त किया। इन सब में एक एक शासनकर्ता रहता था और उन सब की सभा का स्वयं चार्ल्स अधिपति था। हरएक ताल्लुक़ेदार और सूबेदार को 'राजभक्ति' के लिए शपथ खानी पड़ती थी। अन्यथा वह किसी को भी अधिकार नहीं देता था। प्रजा के दुखों को वह पूरे तौर से सुनता था। यदि कोई अधिकारी प्रजा के साथ न्याय न करता तो वह उसकी अपील महाराज के पास कर सकता था। प्रजा की दशा की जांच करने के लिए दौरा करनेवाले अफ़सर नियत थे। इसने चर्च (गिर्जाघर समुदाय) की शासनपद्धति में बहुत कुछ सुधार किया। अनेक धार्मिक मठों में पाठशालायें स्थापित कर दीं। वहां बालकों तथा बालिकाओं को शिक्षा मिलती थी। स्वयं चार्ल्स कभी कभी पाठशालाओं में जाकर विद्यार्थियों के पाठों को सुनता था।

इसने अनेक धर्मग्रन्थ एकत्र किये। उनकी सहस्रों प्रतियों का वितरण धर्मार्थ हुआ करता था। इटली से उत्तम उत्तम गानेवालों को बुला कर उसने अपने यहां संगीत-शास्त्र की चर्चा फैलाई। चार्ल्स सर्वदा विद्याप्रचार की फ़िक्र में रहता था। इसने 'ए' और ईंजलहम में दो उत्तम गढ़ बनवाये। एक बड़ा धर्ममन्दिर भी 'ए' में

बनवाया गया। व्यापार बढ़ाने का उसने बड़ा प्रयत्न किया। एक नहर भी खोदने का प्रारम्भ किया गया, परन्तु वह पूर्ण न हो सकी।

चार्ल्स उन्नत, विशाल, और सुन्दर था। वह कोई ७ फिट ऊँचा था। वह सदा सामान्य भोजन करता और बड़ाही तेजस्वी और गम्भीर था। अन्त में राज्यभार अपने पुत्र लुई को देकर ८१४ ईसवी में उसने परलोकगमन किया।

६–शार्लमेन के उत्तराधिकारी।

(८१४—९११)

लूई (८१४–८४०) अयोग्य राजा था। वह तुच्छ स्वभाव और चंचल था। वह सदा अच्छाही करने की कामना किया करता था, परन्तु आत्मशासन के अभाव से उसके लिए हरएक विषय दुष्कर था। उस बड़े भारी राज्य पर उचित शासन करना उसके लिए असम्भव था। राजा की निर्बलता के कारण, उसके आधीन राजा लोगों ने आपस में लड़ाई करना आरम्भ किया। इसके ४ पुत्र भी परस्पर युद्ध करने लगे। ८४१ में राज्य-स्वत्व तै करने के लिए फ़ान्टन्वा में एक बड़ा संग्राम हुआ। अन्त में 'वर्डन' के सन्धि-पत्र से सब राज्य उसके पुत्रों में बँट गया। 'लाथेयर' (Lothair) को महाराजकीय अधिकार, नेदरलैंड्स, बर्गंडी और इटली, लुई को कुल जर्मनी और चार्ल्स को पश्चिमी फ्रांस मिला। इस प्रकार जर्मनी, पुत्र लुई के शासन में, एक पृथक् राज्य हुआ, और अब यहाँ के राजा को केवल इसी देश पर देख रेख करनी पड़ती थी। यह

दृढ़ आशा थी कि ऐसे अलग हो जाने से जर्मन-लोग किसी न किसी समय अपने "सम्मिलित हित" (Common interest) का गौरव अवश्य समझेंगे। वास्तव में भविष्य महाराज्य का सुधार होने की अब पूर्ण सम्भावना थी।

उत्तरीय और दक्षिण की खेती की प्रथा में अब तक बड़ा अन्तर था, परन्तु फ़्रैङ्क वंशीय राजाओं ने दोनों भागों की प्रणालियों को समान बना दिया। समस्त भूमि अब 'रईस' (Nobles) लोगों में बँटी हुई थी। बड़े ताल्लुक़ेदार उसे सर्व साधारणों में विभक्त करते थे। भूमिकर के स्थान में ये लोग अपने शासनकर्ताओं को आज्ञानुकूल लड़ने को तैय्यार रहते थे। छोटे ताल्लुक़ेदारों पर बड़े ताल्लुक़ेदार शासन करते थे और इन सब पर स्वयं महाराज की देख भाल रहती थी। यहां पर इसी प्रकार का 'फ़यूडल सिस्टम' प्रचलित था।

चार्ल्स दि फ़ैट, अर्नल्फ़, और चार्ल्स दि चाइल्ड क्रमशः उत्तराधिकारी होते चले आये। इसी काल में नार्मन लोगों ने धावा मारना प्रारम्भ किया। ये लोग इंग्लैंड में आल्फ़्रेड को कष्ट देही रहे थे, फ़्रांस में 'नार्मंडी' अपने नाम पर बसा चुके थे, यहां जर्मनी में भी कुछ भूमिपर अधिकार करके नार्थम्ब्रिया अपने नाम पर बसाया। ८४० से ९११ तक इनके आक्रमणों की बड़ी धूम रही। उक्त तीनों राजाओं में से कोई भी ऐसा न था जो उचित रीति से सब पर अपना अधिकार रख सकता। इस कारण राज्यभर में बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। धीरे धीरे बड़े बड़े ताल्लुक़ेदार (Barons) स्वतंत्रता प्राप्त करने लगे। इन लोगों का अधिकार

बढ़ा और राज-शक्ति का ह्रास होता गया। बहुत गड़बड़ देख कर 'मेग्यार' जाति के लुटेरों ने जर्मनी पर आक्रमण किया। इन लोगों ने भी अपना काम ख़ूब बनाया। शार्लमेन का वंशज वर्तमान राजा बालक ही था और ९११ में उसका शरीरपात हो गया। बड़े ताल्लुक़ेदार लूट मार कर रहे थे। समस्त देश में हाहाकार मचा था। प्रजा पीड़ित थी और शक्तिमान् ताल्लुक़ेदार सब को सता रहे थे। राज्यासन ख़ाली था। उक्त बालक लुई की मृत्यु के साथ साथ शार्लमेन के वंश की भी समाप्ति हो गई।

७-हेनरी दि फ़ाउलर।

(९१९—९३६)

राज्य का शासन, राजा का निर्वाचन, और प्रजा का उद्धार, यह सब कुछ अब बड़े ताल्लुक़ेदारों के हाथ में था। बिना रिशवत लिए ये लोग किसी राजा को गद्दी पर बैठाने में बड़ी आनाकानी करते थे। फ़्रैंक जाति के एक बड़े ताल्लुक़ेदार "कानरड" को इन लोगों ने राज्य पर बिठाया। सैक्सनी के युवा 'ड्यूक' हेनरी से इसकी बड़ी शत्रुता थी, तथापि ९१९ में मरणकाल के आने पर कानरड, हेनरी को ही अपना उत्तराधिकारी बना गया। उसने कहा—"हेनरी यद्यपि मेरा शत्रु है, तो भी उसकी योग्यता का अन्य कोई मनुष्य नहीं मिल सकता, अतएव मेरे बाद हेनरीही राजा हो।" हेनरी दि फ़ाउलर बुद्धिमान् चतुर और सुयोग्य राजा था। राज्य पर बैठते ही 'हंगेरियन' लोगों के आक्रमण से छुटकारा पाने की फ़िक्र वह शोचने लगा। विचार कर उसने कौशलपूर्वक हंगेरियन जाति से यह शर्त करली कि यदि वह ९ वर्ष तक उन्हें कर

देता रहे तो वे उसके राज्य पर कदापि आक्रमण न करें। इसी बीच में हेनरी ने सीमा प्रान्त में बड़े उत्तम उत्तम गढ़ बनवाये, और गोला बारूद तथा सब लड़ाई का सामान पूरे तौर से एकत्र कर लिया। गढ़ों के आस पास नगर बसने लगे। ठीक दशवें वर्ष हेनरी ने कर देने से इन्कार किया। हंगेरियन लोगों ने बड़े ग़ुस्से में आके खूब ज़ोर बांध कर, उस पर हमला किया। इधर जर्मनवासी तैयार ही थे। ख़ूब लड़ाई हुई। जर्मन लोगों ने मर्सबर्ग में उन्हें ख़ूब परास्त किया और प्रायः तीस हज़ार हंगेरियन खेत आये।

इस राजा ने एक और भी उत्तम संशोधन किया। बड़े ताल्लुक़ेदारों के छोटे भाई रियासत में कुछ भी भाग न पाने के कारण निरुद्यम होकर, इधर उधर लूट मार किया करते थे, जिससे राज्य में बड़ी अशान्ति फैलती थी। हेनरी ने इन लोगों को अपने राज्यका 'नाइट' (Knight) बनाया और इन लोगों की जीविका का प्रबंध कर दिया।

९३६ में हेनरी की मृत्यु होने पर, उसका पुत्र प्रथम आटो (Otto I.) राज्य पर बैठा। यह भी योग्य राजा था। इंग्लैंड के राजा एडमंड की पुत्री एडिथ के साथ इसका विवाह हुआ। सब रईस लोग इसकी सेवा बड़ी भक्ति के साथ करते थे। इसने भी राज्य की अच्छी उन्नति की। बाद को इसके पुत्र आटो द्वितीय, फिर आटो तृतीय ने क्रमशः राज्य किया। हेनरी दी सेंट से सैक्सन वंश समाप्त हुआ।

८—सैलिक फ़्रैङ्कवंश।

(१०५३—११२५)

फ़्रैंक जातिका कानरड द्वितीय १०५३ ईसवी में राजसिंहासन पर बैठा। उसके बाद उसीके पुत्र हेनरी तृतीय ने शासन किया।

ये दोनों राजा सुयोग्य थे। उक्त हेनरी का पुत्र हेनरी चतुर्थ अभी बालक था और उसकी माता महारानी की देखभाल उसपर रहती थी।

शार्लमेन ने दो एक बड़े महन्तों (Archbishops) के कुछ भूमि दे रक्खी थी। इन लोगों के शासन के सब अधिकार प्राप्त थे। कोलोन और मैंज़ के महन्त इस समय बड़े शक्तिमान् थे। ये प्रायः अपने को स्वतंत्रही मानते थे। वर्तमान राजा हेनरी चतुर्थ को बाल्यावस्था में देखकर ये लोग अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए यत्नवान् हुए।

संगति ख़राब होने के कारण, हेनरी बढ़ने पर बड़ा अदूरदर्शी और स्वच्छन्द हो गया। इसी काल में इससे और कोलोन के बड़े महन्त से कुछ झगड़ा भी उठ खड़ा हुआ। हेनरी ने अपने प्रतिपक्षियों को निकालना शुरू किया। रोम के पोप ग्रेगरी सप्तम ने हेनरी के नाम, अपने दोष क्षमा कराने की प्रार्थना के लिए, आज्ञापत्र भेजा। हेनरी के इन्कार करने पर, पोप ने उसे जाति-बाहर और राज्य-च्युत कर दिया, और स्वाबिया के रडल्फ़ को उसके स्थान में चुना। राजा से असंतुष्ट होने के कारण प्रजा भी यह फ़ैसला मानने के तैयार थी। बाद को हेनरी ने पश्चात्ताप करके पोप से क्षमाप्रार्थना की। बहुत दुःख झेलने पर बड़ी मुश्किलों से पोप ने उसका उद्धार किया।

अब हेनरी चतुर्थ फिर राज्यपर बैठा। धीरे धीरे उसने अपनी शक्ति बढ़ाई। मौक़ा देख कर बदले में इसने भी चतुराई के साथ पोप को आसन से हटा कर एक नये पोप का निर्वाचन किया। इसने अपने शत्रुओं से पूरा बदला लेलिया था, परन्तु इसका जीवन चैन से न कट सका। अन्त में इसके पुत्र हेनरी पंचम ने अपने पिता के कारागार में भेजकर अपने को राजा बनाया।

हेनरी षष्ठम (११९०—११९८) पल्ले दरजे का निष्ठुर था। ख़राब बर्ताव होने के कारण सब रईस इससे बिगड़े रहते थे। पालरमों के लोगों पर इसने मिथ्या राजद्रोह आरोपण किया और उन सबको एकदम विनष्ट करने की क्रूर आज्ञा दी। लाखों मार डाले गये; हज़ारों को फाँसी दी गई और सैकड़ों ज़िन्दा ही पृथ्वी में गाड़ दिये गये। पालरमो नगर की भूमि ख़ून से लाल हो गई थी। वहाँ के रईस रिचार्ड को घोड़े की पूँछ में बँधवा कर इसने खिँचवाया। यह घटना सन् ११९४ में हुई।

११९८ में इसकी मृत्यु होने पर फ़्रेडरिक द्वितीय, हेनरी रैस्प, हालैंड के विलियम, कानरड चतुर्थ, कार्नवाल के रिचार्ड और कैस्टाइल के अल्फ़ोन्सो (क्रमानुसार) महाराज-पद पर आसीन हुए। यह समय राजकीय बल के ह्रास का था। रईस लोगों ने इतस्ततः बलवा करना शुरू कर दिया, जिसे चाहते मारते, काटते और सत्यानाश करते थे। गावों को उजाड़ रहे थे और सारे देश को वीरान कर रहे थे। पोप भी अपनी शक्ति को बढ़ा रहा था। जर्मनी भर में अराजकता फैली हुई थी। महन्त और बड़े रईसों के डर से कोई महाराज बनना स्वीकार नहीं करता था। जिसको जो इच्छा होती थी वही करता था। इस काल में शहर उत्तम दशा में थे। वे व्यापार, बल तथा कला-कौशल के केन्द्र थे। गिर्जाघरों की भी दशा सुधरी हुई थी। इसी कारण जर्मन-महाराज्य पर कोई बड़ा आघात नहीं पहुँचा, और देश थोड़ा बहुत सम्हला रहा, नहीं तो इसके सत्यानाश हो जाने में कोई कसर नहीं रह गई थी।

—:०:—

१०—साहित्यावस्था (१३ वीं शताब्दी तक)

शार्लमेन के समय से जर्मन लोगों में विद्यानुराग बढ़ने लगा था। बहुत पूर्वकाल से भी देवता अथवा राजा लोगों की प्रशंसा में काव्यरचना हुआ करती थी। तदनन्तर ईसाई मत का प्रचार होने पर धर्मोपदेशकों ने बहुत कुछ विद्योन्नति की। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, शार्लमेन के काल से विद्या की ओर अभिरुचि ज़्यादा होने लगी और शनैः शनैः अधिकता को प्राप्त होती गई। बीच में अशान्ति होने के कारण अनेक आक्रमणों के होने से विद्योन्नति को बहुत आघात पहुंचा, तथापि शिक्षाविभाग इस काल में एक उत्तम कक्षा को प्राप्त था।

पहले विद्यानुराग अधिक होने पर, लोगों ने लैटिन भाषा में अनेक पुस्तकें रचीं। ऐसेही धार्मिक कविता आरम्भ हुई। इस काल का 'हेलियाण्ड' (Heliand) नामक महाकाव्य बहुत विख्यात है। आठवीं शताब्दी से बड़े बड़े ताल्लुक़ेदारों की भी प्रवृत्ति विद्या की ओर हुई। वे विद्वानों को सहायता देते और उनके द्वारा उत्तम उत्तम ग्रंथ बनवाते थे। ११ वीं शताब्दी में 'आख्यायिकाओं' के अनेक ग्रन्थ तैयार हुए। नीबेलूंग्यन् लीड (Niebelungen Lied) इस समय का अत्यन्त विख्यात ग्रन्थ है। बहुधा इसकी समता होमर के 'इलियड' से दी जाती है। इस समय में बड़े बड़े उत्तम आख्यायिकाकार (Romancers) हो गये हैं।

हेनरी पंचम (१०९९—११२५)। इंगलेंड के राजा हेनरी प्रथम की पुत्री मैटिल्डा के साथ इसका विवाह हुआ। इसके सब कुछ प्रयत्न करने पर भी, समस्त बड़े ताल्लुक़ेदार दिन प्रतिदिन शक्तिमान् होते गये। बड़े महन्त, महन्त, लाट पादड़ी, और स्वयं रोम के पोप इन लोगों को स्वतंत्र बनने में पूरी सहायता दे रहे थे। पोप सदा जर्मन महाराज की शक्ति से डर कर आन्तरिक विग्रह लगाये रहता था। यह समय राजकीय शक्ति के ह्रास का था। लड़ाइयों के कारण राज-शक्ति गिर रही थी, और महन्तसमुदाय (Clergymen) के साथ साथ बड़े ताल्लुक़ेदार स्वाधीन हो रहे थे।

इन दिनों (१०९६—१२९१ में) 'क्रूसेड' लड़ाइयों की धूम समग्र योरोप में मची थी। पीटर नामक एक साधु के व्याख्यानों से उत्साहित होकर सब योरोप के राजा ईसामसीह की जन्म-भूमि जेरुज़लम को मुसलमानों से मुक्त करने को कटिबद्ध थे। अनेक लड़ाइयां इस कारण हुईं। कई बार इन लोगों की जीत हुई। इन युद्धों से पश्चिम के लोग भूगोल, इतिहास, प्राकृतविज्ञान को बड़ी अभिरुचि के साथ देखने लगे।

९—होहेनस्टाफ़ेन वंश।

(११२५—१२७३)

फ़्रैंक वंश की समाप्ति होने पर इस देश में अराजकता फैली हुई थी। रईसों ने किसी को 'महाराज' पद के लिए निर्वाचित करने का विचार आपस में किया। इस समय केवल स्वाबिया, सैक्सनी और आस्ट्रिया के बड़े रईसों (Dukes) में ही से एक

कोई महाराज बनाये जाने के योग्य था। सैक्सनी और आस्ट्रिया के रईसों ने इतने बड़े पद से भय खाकर महाराज बनना अस्वीकार किया। स्वाबिया के फ़्रेडरिक ने बड़े अभिमान के साथ जर्मन-महाराज्य को सुशोभित करने की तैय्यारी की। परन्तु मैंज़ का महन्त उसी को महाराज बनाना चाहता था जो उसकी अधीनता स्वीकार करे। फ़्रेडरिक ने इस बात से इन्कार किया। अतएव सैक्सनी के लाटेयर को महाराज-पद दिया गया।

लाटेयर (११२५—११३७)। यह बहुत सीधा राजा था। स्वाबिया के फ़्रेडरिक और फ़्रेंकोनिया के कानरड आपस में ख़ूब लड़ते हुए इसे सदा दबाते रहे। इसने अपनी पुत्री 'गर्ट्रूड' को बवेरिया के हेनरी के साथ ब्याह दिया। ११३७ में इसकी मृत्यु हुई।

अब फिर उत्तराधिकार के लिए बड़ी ठायँठायँ हुई। अन्त में होहेनस्टाफ़ेन वंशीय कानरड तृतीय ११३८ में महाराज-पद पर निर्वाचित हुआ। इसके राजत्व-काल में राजकीय वंशों में परस्पर युद्ध होने से बड़ा गड़बड़ रहा। इसने ११४७ में क्रूसेड संग्राम में योग दिया। ११५२ में, इसके मरने पर, इसके भतीजे फ़्रेडरिक—बारबरोसा ने राज्यासन लिया।

बारबरोसा (११५२—११९०) ने योग्यता के साथ शासन किया। अनेक बड़े ताल्लुक़ेदारों के साथ इसने उत्तम बर्ताव किया। अतएव वे इसे मानने लगे थे। मिसिर देश पर इसने चढ़ाई की, किन्तु मार्ग में नदी उतरते समय यह डूब के मर गया।

११–हैप्सबर्ग, बवेरिया और लक्सेम्बर्ग के राजे।

(१२७३—१४९३)

अराजकता के कारण अब लोग बहुत व्याकुल हो रहे थे, अतएव किसी को निर्वाचित करने की सलाह ठहरी। सर्वसम्मत्यनुकूल हैप्सबर्ग (स्विट्ज़रलैण्ड) के रुडल्फ़ ने १२७३ में राज-पद शोभित किया। प्रादेशिक रईस को पराजित करके इसने बोहेमिया को अपने पहले वाले तअ़ल्लुक़े हैप्सबर्ग में मिला दिया। इसने पोप की बहुत सी बातें मान के उसके पक्ष के प्रतिपोषक प्रस्ताव स्वीकार कर लिए। १२९२ में इसकी मृत्यु हुई।

इसके बाद लोगों ने नासो के 'अडालफ़स' को महाराज बनाया। बड़े रईसों में विकट संग्राम होने के अतिरिक्त और कोई विशेष घटना न हुई। १२९८ में रुडल्फ़ के पुत्र अल्बर्ट प्रथम का निर्वाचन हुआ। यह हैप्सबर्ग तअ़ल्लुक़े को आत्मसात् करने की फ़िक्र करता रहा, और इसी प्रयत्न में इसकी मृत्यु भी हो गई। नासो के अडालफ़स को इसने पूर्व ही मार डाला था। अनन्तर १३०८—१३१४ तक लक्सेम्बर्ग के हेनरी सप्तम ने राज्य किया। हैप्सबर्ग के लोगों के साथ मेल पैदा करने के लिए इसने अनेक उपाय किये। बवेरिया का लडविग इस समय शक्तिमान् था और वही गद्दी पर बैठा।

लडविग चतुर्थ (१३१४—१३४७)। हैप्सबर्ग वालों से और आस्ट्रिया के राजा से लड़ाई शुरू हो गई। पोप और फ़ांसराज से भी संग्राम के सूत्रपात होने का डर था। लडविग को बहुत आकुल होना पड़ा। पोप ने इसे जाति-बहिष्कृत किया था

परन्तु १३३८ वाली फ़्रैंकफ़र्ट की महासभा में जर्मन देश के लोगों ने पोप की आज्ञा को रद कर दिया। हालैंड और ज़ीलैंड पर भी इसे अधिकार मिल गया।

यद्यपि इसे चारों ओर से आक्रमण होने का भय था, तथापि जर्मनवासियों में स्वदेश-प्रेम का गूढ़ संचार हो जाने के कारण विदेशीय हमलों से डरने की कोई आवश्यकता न थी। वे पोप को कुछ भी नहीं मानते थे और घरेलू मामलों में विदेशी हस्तक्षेप को एक दम नापसन्द करते थे। समस्त जर्मनदेश अब अपनी जन्मभूमि के लिए कट मरने को तैय्यार था। अपने को इस भांति बलवान् समझता हुआ लर्डविग भी निर्भय होकर अपनी स्वाधीनता प्रतिपादित करने को सन्नद्ध था। फ़्रैंकफ़र्ट की सभा से फिर यह निश्चित कर दिया गया कि जर्मन-महाराज के निर्वाचन के मामले में पोप को ज़रा भी अधिकार न था। उसके मरणानन्तर १३४७ में लक्सेम्बर्ग के चार्ल्स चतुर्थ ने राज-पद अलंकृत किया।

चार्ल्स चतुर्थ (१३४७--१३७८) को लोगों ने राजा बनाने से इन्कार किया। अतएव इसे बाहर भाग जाना पड़ा। १३४९ में गन्थर को राज्यासन मिला, परन्तु कुछ अनबन होजाने से उसने महा-राज-पद त्याग दिया। फिर चार्ल्स चतुर्थ को वापस होके शासन-भार अपने ही ऊपर लेना पड़ा। इसी के समय में गोल्डेन बुल निश्चित कर दिया गया। इसके द्वारा यह तै हो गया है कि अमुक अमुक सात पदाधिकारियों ही को निर्वाचन स्वत्व प्राप्त रहेगा।

स्वयं महाराज की अपेक्षा इस 'सप्तमन्त्रि-मण्डल' का बल विशेष था। चार्ल्स के बाद राज्यभार उसके पुत्र 'वेन्सेस्लस' के हाथ आया।

वेन्सेस्लस बड़ा अयोग्य राजा था। इसका अधिक समय हँसी दिल्लगी में व्यतीत होता था। १४०१ में लोगों ने रूपर्ट को राज-पद के लिए चुना, परन्तु कुछ कारणों से वह शासन न कर सका। कुछ काल बाद सिजिस्मण्ड ने वेन्सेस्लस को क़ैद कर अपने को राजा बनाया।

यह सिजिस्मण्ड राजा बड़ा अभिमानी था। कांस्टेंस की महासभा और 'हसाइट' (Hussite) युद्ध इसी के समय में हुए। धार्मिक विवाद होने के बाद मतभेद हो जाने पर, जान-हस को जीवित जला देने की आज्ञा इस राजा ने दी। यह जान कर बोहेमिया के लोग बिगड़ पड़े और 'ज़िस्का' के छोटे ताल्लुक़ेदार जान को अपना सेनापति बना कर, उन लोगों ने प्रचण्ड मार काट आरम्भ की। इन लोगों ने राजकीय सेना को अनेक बार हराया, और बवेरिया के साथ साथ फ़्रैंकोनिया को भी तहसनहस कर दिया। कालान्तर में इनके कहने के अनुकूल धार्मिक संशोधन हो जाने पर फिर से १४३३ में शान्ति स्थापित हुई।

लक्ससम्बर्ग वालों के बाद १४४० में हैप्सबर्ग के लोगों के हाथ राज्यासन फिर आगया, और तब से १८०६ तक यही वंश शासन करता रहा। अलबर्ट द्वितीय ने केवल एक वर्ष राज्य किया। फ़्रेडरिक तृतीय उसका उत्तराधिकारी हुआ।

फ़्रेडरिक तृतीय (१४४०—१४९३) ने बहुत काल तक राज्य किया, परन्तु राजकीय मामलों पर ध्यान देना यह बिलकुल नहीं

जानता था। जिस समय महासभा में किसी बड़े भारी मामले पर वार्त्तालाप होता था उस समय आपको निद्रा अवश्यमेव आजाती थी। चाहे राज्य पर किसी प्रकार की भी भयानक आपत्ति आगिरे, परन्तु आपके सुख-भोग में ज़रा भी विघ्न न होना चाहिए। राज्य-कार्य्यों में बड़ी गड़बड़ी फैली हुई थी, और छोटे बड़े ताल्लुक़ेदार (Barons and Knights) सब बलवा करने को उद्यत थे। समस्त प्रजा राजाज्ञा के बन्धन को तोड़ डालने पर तैयार थी। तुर्क लोग जर्मनी पर चढ़ाई करने के प्रयत्न में थे, परन्तु राजा साहब को इन झंझटों से कोई भी सरोकार न था। यदि जर्मन-प्रजा तुर्कों के आक्रमणों को वीरता के साथ न हटा देती, तो जर्मनी को न मालूम कितनी क्षति होती। हंगरी और बोहेमिया अपने पृथक् राजा चुन कर स्वाधीन हो गये। इस समय समस्त महाराज्य बड़ी दुर्दशा में था। सब स्थानों में एक न एक विभ्राट् उपस्थित था। जर्मनी को इस निकृष्ट दशा पर पहुंचा कर, इस राजा ने परलोक गमन किया, और इसका चतुर तथा सुयोग्य पुत्र मैक्स-मिलान प्रथम १४९३ में गद्दी पर बैठा।

१२—मैक्समिलान प्रथम।

(१४९३—१५१८)

इस राजा के राजत्वकाल से जर्मनी के प्राचीन समय की समाप्ति और नवीन का प्रारम्भ होता है। यह राजा बड़ा पराक्रमी, धीर और शिष्ट था। इसने राज्य के विप्लवों को हटाकर फिर से शान्ति

स्थापित की। क्या इसके शत्रु, क्या मित्र, एवं प्रजा और सामन्त राजा सब इसकी सुयोग्यता की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते थे।

इसने १४९५ में यह राज-नियम प्रचार किया कि प्रजा आपस ही में एक दूसरे से बदला न लेलिया करे, प्रत्युत सब ऐसे मामले राजकीय न्यायालयों में पेश किये जावें। प्रबन्ध के लिए उसने समग्र देश दस भागों में बाँट दिया और सब में एक एक शासक नियत किया। इसने राज्य की बड़ी उन्नति की। डाक-विभाग इसी समय से खोला गया। इस काम में राजा को बड़ी विपत्ति सहनी पड़ी थी। सभी सामन्त रियासतों से सन्धिपत्र लिखा कर और नई सड़कें तैयार करने के बाद डाक का समुचित प्रबंध सुधारना, तब का अशान्तिपूर्ण समय देखते हुए, एक सरल काम न था। मैक्समिलान ने अपने पड़ोसी राज-समूह से मित्रता करनी प्रारम्भ की। हंगरी, बोहेमिया और स्पेन के साथ इसने अच्छी मैत्री करली। स्पेन राज्य की एक मात्र उत्तराधिकारिणी 'जोआना' के साथ इसने अपने पुत्र का विवाह किया। केवल फ्रांसवासी, तुर्क तथा रोम के पोप अब शत्रुओं में शेष थे, और बाक़ी सब राज्यों के साथ इसका मित्रभाव था।

इस समय जर्मन-साहित्य दिन प्रति दिन उन्नति को प्राप्त हो रहा था। अभी तक जर्मनी में उच्च और निम्न (High and Low) दो प्रकार की भाषा बोली जाती थी, परन्तु दोनों तरक़्क़ी करते करते अब समान होगईं। छापेखाने (यंत्रालय) भी स्थान स्थान पर खुल गये, जिनकी सहायता से पुस्तकप्रचार उत्तमतया होने

लगा। पुस्तकों का मूल्य सस्ता होने से अब ग़रीब अमीर समस्त प्रजा का अनुराग लिखने पढ़ने में बढ़ रहा था। रईस, महन्त-समुदाय, और सर्वसाधारण विद्योपार्जन में व्यग्र थे। इस काल में उत्तम उत्तम ग्रन्थकार हो गये हैं, जिनकी बनाई हुई पुस्तकें आज भी जर्मनी के साहित्य की शोभा बढ़ा रही हैं। आज कल भंडौवा बनाने में लोगों की बड़ी रुचि थी। इस विषय में सेबस्टियन ब्रेंट, मर्नर और जान फिशार्ट आदि बड़ी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। अलरिश वान हटेन एक उत्कृष्ट कवि इस समय का हुआ है और अल्बर्ट डूरर प्रथम कक्षा का चित्रकार और वैज्ञानिक था। जान आर्नड्ट बड़ा प्रबल गद्यलेखक था। अनेक इतिहास लिखने वाले और नाटककार इस समय वर्तमान थे। रंगभूमि तैयार करके लोग नाटकों को खेलते भी थे। संगीतशास्त्र तरक़्क़ी पर था। रईस लोग विद्वानों को आश्रय देते और साहित्योन्नति के लिए बहुत कुछ व्यय करते थे।

जर्मनी के नगरसमूह इस समय बड़ी उन्नति पर थे। नगर के चारों ओर दीवारें बनाई जाती थीं और उसके बाद एक खन्दक़ होती थी। आज तक यहां नगर ही विद्या, धन, तथा व्यापार के केन्द्र थे। सुन्दर सुन्दर मकान तैयार किये जाते थे। मकानों में बहुधा पत्थर लगाया जाता था। उनके ऊपर बुर्ज और कमरों में खिड़कियां रक्खी जाती थीं।

१५१८ में मैक्समिलान प्रथम की मृत्यु होने पर उसका पुत्र चार्ल्स पंचम राजसिंहासन पर बैठा।

१३—मार्टिन ल्यूथर।

(१४८३—१५४६)

अभी तक रोम के पोप का अनन्य शासन जर्मन देश में वर्तमान था। धर्मालयों में सब कार्य्यवाही पोप की आज्ञा से होती ही थी, पर राज्यकार्य्यों में भी उसके दबदबे के कारण कोई चूँ तक नहीं कर सकता था। परन्तु अब इस धार्मिक शासन के कायापलट होने का समय था। प्रजावर्ग इस कठोर शासन से ऊब गये थे और स्वतंत्र होने की कामना कर रहे थे। सर्व साधारण को यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि अब जर्मनी के सुधार के दिन आगये हैं। और उनका उत्साह दिन दूना रात चौगुना होरहा था। वे जातीय अभिवृद्धि और उन्नति के लिए पुरानी वाहियात कुरीतियों के हटाने को प्रस्तुत थे। जब कि जर्मनी का गगनमण्डल ऐसे ऐसे उत्तम और उन्नायक विचारों से परिपूर्ण था, तब ही मार्टिन ल्यूथर के सदृश सुयोग्य और प्रबल विद्वान् का उत्पन्न होना देशीय उन्नति के अर्थ अत्यन्त सामयिक और हितकर था। धर्मवेत्ता ल्यूथर की प्रतिभा अद्यावधि योरोप के समस्त देशों को देदीप्यमान कर रही है।

मैनफ़ील्ड प्रदेश के एस्लेबेन (Eisleben) नामक छोटे से ग्राम में, एक निर्धन स्लेट बनाने वाले के घर, मार्टिन ल्यूथर का जन्म सन् १४८३ में हुआ। छोटे पन से ही बालक के मस्तक पर सौभाग्य-रेखा चमक रही थी। पिता ने ल्यूथर को पहले पाठशाला में पढ़ा कर कालेज को भेजा। उसकी यह इच्छा थी कि

ल्यूथर कालान्तर में वकालत करे। परन्तु बाल्यावस्था से इसे एक प्रकार का विराग सा था और विशेष प्रवृत्ति• सांसारिक बातों की ओर न होकर धर्म की तरफ़ थी। १५०५ में ल्यूथर ने एम० ए० की पदवी प्राप्त की। इसी साल घरबार छोड़ कर यह एक संगत में साधू हो गया। परिश्रम करके उसने समस्त बाइबिल बड़े ध्यान के साथ पढ़ी। इसके धार्मिक विचार रोज़ बरोज़ उच्च-कोटि को प्राप्त होते जाते थे। १५०८ में यह नियमपूर्वक विटेनबर्ग का महन्त बनाया गया। कुछ काल बाद वहाँ के विद्यालय में ल्यूथर की नियुक्ति अध्यापक पद पर हुई। सहाध्यापक और विद्यार्थी इसकी बड़ी प्रतिष्ठा करते थे। ल्यूथर की ओजस्विनी वक्तृता सुनकर उन लोगों की भक्ति और भी बढ़ी। धीरे धीरे प्रायः समस्त जर्मनी में इस विद्वान् उपदेष्टा के व्याख्यानों की धूम होने लगी और लाखों आदमी दूर दूर से उसके वचनों को सुनने के लिए एकत्र होने लगे। अभी तक ल्यूथर एक साधारण कैथोलिक* ही था।

१५११ में वह रोम को तीर्थयात्रा के लिए गया। उस पवित्र-स्थल में अनेक कुरीतियों को देखकर ल्यूथर का चित्त उद्विग्न हुआ। वहां से लौटने पर उसने कैथोलिक धर्म को तिलांजलि देकर अपना एक न्यारा पन्थ फैलाने का विचार किया। उसने पहले ही पहल पोप के सार्वभौमिक महत्त्व का कड़ा विरोध किया और कैथोलिक दल के पाषण्ड और ठगविद्या को प्रकट रूप से प्रकाशित करने लगा। इसी समय रोम से कुछ लोग 'पाप-क्षमा'

---

* इस शब्द के अर्थ के लिए ३२ वां पृष्ठ देखिए।

के टिकट बेचने के लिये जर्मनी में आये। ल्यूथर ने सर्व साधारण को समझाया कि पाप के लिए क्षमा प्रदान करने का अधिकार केवल ईश्वर ही को था, और पोप आदि का ईश्वर-प्रतिनिधि बनना एक प्रहसन मात्र था। इण्डल्जेन्स (Indulgence) नामक पोप (रोमवासी कैथोलिक धर्म का अधिष्ठाता) के टिकट लेकर पाप से कोई नहीं मुक्त हो सकता था। मनुष्य को पाप से छूटने के लिए वास्तविक पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त करना चाहिए। तभी भगवान् प्रसन्न होंगे। पवित्र जीवन से परमात्मा ख़ुश होगा। तत्कालीन धर्मवेत्ताओं की दृष्टि में यह एक नवीन पन्थ था और वे ल्यूथर को नास्तिक ख़याल करने लगे। इधर अपने महत्त्व को नष्ट होते देखकर पोप भी बिगड़ उठा। ल्यूथर के अनेकानेक शिष्य होते गये और विरोध की ज्वाला यहाँ तक बढ़ी कि १५१७ में खुल्लम खुल्ला पोप से झगड़ा शुरू हुआ। १५१७ ही वास्तव में संशोधन (Reformation) के आरम्भ होने का साल है।

ल्यूथर ने प्राचीन गिर्जाघर के इतिहास को जाँचना शुरू किया। पवित्र जीवन पर उसने बड़ा ज़ोर दिया। उसका मत था कि ऊपरी दिखाव से कुछ नहीं हो सकता। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए पाषण्डी महन्तों की आवश्यकता न थी, और न पोप ही की भक्ति करने की ज़रूरत थी। १५२० में इसने (Babylonian Captivity of God) 'बैबिलोन नगरीय ईश्वर की गिरफ़्तारी' नामक अपने विचारों की प्रदर्शक एक पुस्तक मुद्रित की। इसमें उसने पोप के धार्मिक शासन पर पूरा कटाक्ष किया। बैबिलोन

नगर की उपमा लेकर उसने धार्मिक प्रश्न पर इसमें व्याख्यान दिया है। जैसे कि यहूदी लोग उक्त नगर में बन्द कर दिये गये थे, वैसे ही कैथोलिक गिर्जाघरों में धर्मवेत्ताओं के क़ैद रहने का वर्णन इसमें किया गया है। इसने यह भी दिखाया कि सब धर्म-संस्कारों (Sacrament) को पोप ने पकड़ लिया था और अब उन्हें कैसे छुड़ाना चाहिए। यह ग्रन्थ लिखने के पूर्व वह 'क्षमाप्रार्थना-विक्रय' (Selling indulgences) की प्रथा में ९५ दूषण दिखा चुका था, जिससे उसका बड़ा नाम हुआ। १५२२ में उसने नवीन 'टेस्टामेण्ट' का अनुवाद देशी भाषा में प्रकाशित किया। उसी साल में उसने १३० छोटी छोटी धर्मपुस्तकें छपवाईं और १५२३ में पुनः ८३ मुद्रित कराई गईं। इसी प्रकार ल्यूथर प्रायः १५३६ तक उत्तम उत्तम पुस्तकें लिखता रहा। इन धर्मग्रन्थों से सर्व-साधारण को अपने विचारों का परिष्कार करने में बड़ी सहायता मिलती थी। लोग पोप को घृणा की दृष्टि से देखने लगे। ल्यूथर का आदर दिन प्रति दिन बढ़ रहा था। अब इसके अनुगामी लाखों क्या करोड़ों आदमी, केवल जर्मनी ही में नहीं बरन योरोप के सब देशों में, वर्तमान थे। जर्मनी के अनेक रईस भी इसके विचारों के प्रतिपोषक थे। वे सब यह स्पष्ट रूप से चाहते थे कि 'अब जर्मन देश से पोप के अधिकार को हटाकर जर्मन क़ानून का प्रचार हो'। धार्मिक विषय मात्र ही हाथ में न लेकर, ल्यूथर देश-सुधार के लिए भी यत्न कर रहा था। उसके ये वाक्य स्मरणीय हैं "The strength of a town does not consist in its

towers and buildings, but in counting a great number of learned, serious, honest and well-educated citizens." अर्थात् 'बुर्ज और महलों के होने से नगर बलशाली नहीं हो सकता है वरन विद्वान्, गम्भीर, ईमान्दार, और सुशिक्षित मनुष्यों (नागरिकों) की अच्छी संख्या होने ही से वह शक्तिमान् होगा।'

ल्यूथर के प्रबल होते देखकर, 'सरकार' को आशंका हुई। यह समझकर कि लाखों आदमी ल्यूथर के मत को धारण कर रहे हैं, जर्मन महाराज को कुछ भय हुआ। वह यह नहीं चाहते थे कि एकाएक ल्यूथर इतना शक्तिशाली हो जावे। १५२१ की महासभा में यह प्रतिभाशाली महोपदेशक बुलाया गया। इसमें विशेष बल राज-वर्ग और ल्यूथर के विरोधी रईसों का ही था। इन लोगों ने इसकी सब धर्मपुस्तकों को जलवा देने की आज्ञा दी और आदेश किया कि यदि ल्यूथर साल भर के बीच धार्मिक विप्लवों को शान्त करने का उपाय न करे तो उसे तदनन्तर कठोर दण्ड दिया जावे। इस निष्ठुर फ़ैसले को सुनकर असंख्य प्रजा वर्ग ने बग़ावत शुरू की और सब ल्यूथर की सहायता करने को तैय्यार हुए। वर्ष समाप्त नहीं होने पाया था कि प्रजा-प्रतिनिधियों ने बड़ा ज़ोर बांधकर नरेश्वग की सभा की और १५२१ के हुक्म को पलट दिया। फिर १५२६ में सब पन्थो के साथ समान बर्ताव करने के लिए एक क़ानून बनाया गया। १५२९ में महाराज ने फिर विचारसभा एकत्र की और उक्त क़ानून के तोड़ देने की चर्चा उठाई गई। प्रजावर्ग ने इस बात से 'प्रोटेस्ट' अथवा विरोध

किया। इन लोगों में अधिकांश ल्यूथर के मत को मानने वाले थे, अतएव आज से इस पन्थ का नाम 'प्रोटेस्टैण्ट' रक्खा गया। यह राजा प्रजा का झगड़ा १५३० तक चला गया। इस वर्ष आग्सवर्ग में सभा फिर की गई। प्रजा को शान्त रखने के लिए महाराज ने फ़ौज आदि की भी आयोजना कर ली थी। सभा का समय आने पर महाराज-दल का बड़ा भारी विरोध किया गया। इस विरोधी-समुदाय के अगुवा स्वयं 'प्रशिया' के निर्वाचक थे। अधिकांश रईस और समग्र प्रजा अब ल्यूथर के पक्ष में थी। महाराज को अनन्य उपाय होकर सब की बात माननी पड़ी। आज से ल्यूथर को निर्भयता मिली और उसने स्वतंत्रता के स्वच्छ वायु-मण्डल में श्वास लिया।

पहले ही से ल्यूथर के मन में वैराग्य भाव था। इसी कारण धार्मिक आन्दोलनों में उसे इतनी सफलता हुई। वह सर्वदा लोगों को सत्पथ पर लगाने के लिए यत्न करता रहा। गिर्जाघरों की समस्त कुरीतियों को हटाकर उसने अपना परिष्कृत 'प्रोटेस्टैण्ट' पन्थ सर्व साधारण को सिखाया। १५२५ में उसने विवाह भी कर लिया था और उसके अनेक सन्तति भी हुई। उसकी पत्नी एक अच्छे घराने की थी और इस कारण दोनों का गार्हस्थ्य जीवन सुखपूर्वक बीता। १५३० के बाद ल्यूथर का शेष जीवन, कुछ मानसिक उद्वेगों के कारण, सुखपूर्वक न कटा। उसने कई एक अच्छी अच्छी पुस्तकें भी लिखीं। योरोप के अनेक देशों में लाखों मनुष्य ल्यूथर मतावलम्बी थे। उसके जीवन काल ही में इस पन्थ

की बड़ी उन्नति हुई और तब से अद्यावधि इस मत के मानने वालों की संख्या बढ़ती चली आई है। १५४६ में ल्यूथर ने इस संसार को त्याग कर, परलोक-यात्रा की। ईसाइयों में आज दिन ल्यूथर के मत पर चलने वालों की संख्या कई करोड़ है, यहाँ तक कि कई देश के देश प्रोटेस्टैण्ट मतावलम्बी हैं।

१४—चार्ल्स पंचम।

(१५१९—१५५८)

यह राजा चतुर और साहसी था। स्पेन, इटली, बोहेमिया और आस्ट्रिया इसके शासन में थे। राजत्व-काल भर एक न एक शक्ति अथवा अपनी प्रजा के साथ अनेक कारणों से उसे लड़तेही रहना पड़ा। निर्वाचकवृन्द (Electors) अब राज-शक्ति का बढ़ना बहुत नापसन्द करता था और एक स्वाधीन शासन एवं स्वराज्य स्थापन के लिए यत्नवान् था। 'वर्म' नगर की महासभा में यह तै हो गया कि चार्ल्स के कहीं बाहर जाने पर शासन-भार निर्वाचकों के हाथ रहेगा।

मार्टिन ल्यूथर के विचार जर्मनवासियों को खूब स्वतन्त्र बना रहे थे और ये लोग स्वाधीनता के लिए जीवदान करने पर भी तैयार थे। इस मत के लोगों का नाम प्रोटेस्टैण्ट हुआ और महन्त-समुदाय की आज्ञा को यथापूर्व मानने वाले 'रोमन कैथालिक' कहलाते थे। यहाँ पर 'मेलांकटन' नामक पुरुष कट्टर प्रोटेस्टैण्ट था। लाखों जर्मन-वासी इसके कहने पर बलवा भी करने को उद्यत

थे। कृषकवर्ग प्रायः सब स्वतन्त्र विचार का हो गया था। ये लोग टैक्स कम कर देने की प्रार्थना राजा से करने लगे। इन लोगों के साथ साथ मंस्टर-वासियों ने भी बड़ा विप्लव मचाया। धार्मिक मत-भेद होने पर ज़रा ज़रा सी बातों में ख़ूब झगड़ा होता था। चार्ल्स ने स्पायर्स नामक नगर में एक महासभा करके सबको 'धार्मिक स्वातंत्र्य' (Religious liberty) प्रदान किया और उपस्थित झगड़ा शान्त हुआ। १५३० में 'आग्सबर्ग' में एक और महासभा हुई। सब कुछ प्रयत्न किये गये, किन्तु प्रोटेस्टैण्ट रईस लोग बिना लड़े नहीं मानने वाले थे। सैक्सनी के फ़्रेडरिक तथा फ़्रांस के हेनरी द्वितीय भी युद्ध करने को कमर कसे थे। निरुपाय चार्ल्स पंचम को प्रोटेस्टैण्ट रईसों से सन्धि कर लेनी पड़ी, और उसने इन्हें अभीष्ट स्वतंत्रता देने का वचन दिया। इधर पोप पाल चतुर्थ भी लड़ने को कटिबद्ध हुआ। इस समय चार्ल्स बड़ी दुर्दशा में था। चिन्ता के प्रभाव से स्वास्थ्य बिगड़ने पर १५५८ में उसकी मृत्यु हुई।

नेदरलैण्ड, स्पेन, और अमेरिका के उपनिवेश इसके पुत्र फ़्रेडरिक द्वितीय के हाथ रहे और उसका भाई फ़र्डीनेण्ड प्रथम बोहेमिया, हंगरी, जर्मनी आदि का राजा हुआ। उसके बाद फ़र्डीनेण्ड प्रथम का पुत्र मैक्समिलान द्वितीय गद्दी पर बैठा। ये दोनों शान्तिप्रिय थे, अतएव झगड़ा बहुत कम हुआ। तदनंतर मैक्समिलान का पुत्र रडल्फ़ द्वितीय राजसिंहासन पर आसीन हुआ। इसकी अयोग्यता के कारण विभ्राट फिर उपस्थित होने लगे। १६१२ में

उसकी मृत्यु होने पर उसके भाई मेटियाज़ के हाथ में राज-शासन आया।

—:o:—

१५—तीस वर्ष का प्रचंड युद्ध।

(१६१८—१६४८)

आज कल प्रोटेस्टेंण्ट और रोमन कैथोलिक लोगों में घोर शत्रुता थी। ये दो दल अपने अपने प्रतिपक्षियों को बड़ी कड़ी निगाह से देखते थे। कैथोलिक प्रोटेस्टैण्टों को नास्तिक मानते और उन्हें लूट लेने को तैयार थे। प्रोटेस्टेंण्ट लोग कैथोलिकों को, पाषण्डी कहके, मार डालने को सन्नद्ध थे। यह शत्रुता रोज़ रोज़ बढ़ती गई। अन्त में इसी वैर-भाव के कारण यह तीस वर्ष का घोर युद्ध हुआ, जिस में योरोप की प्रायः सब शक्तियाँ शामिल थीं और जिसने समस्त योरोप महाद्वीप को जड़ से हिला दिया। यह संग्राम मेटियाज़, फ़र्डीनेण्ड द्वितीय और तृतीय, इन तीन राजाओं के राजत्व-काल पर्य्यन्त जारी रहा। राजशक्ति दिन प्रति दिन कम हो रही थी और प्रजा की पारस्परिक मेल पैदा करने वाली ग्रन्थि शिथिलता को प्राप्त हो रही थी। वीर मैन्सफ़ील्ड प्रोटेस्टैण्ट सेना का नेता था। १६१८ से संग्राम प्रारम्भ हुआ। दो विदेशी योद्धा राज-सेना के अधिपति थे। प्रोटेस्टैण्ट लोगों ने इँगलैण्ड के जेम्स प्रथम के दामाद फ़्रेडरिक (पलेक्टर पैलेटिनेट) को अपना राजा चुन लिया। संग्राम आरंभ ही हो चुका था। कभी एक पक्ष जीतता और कभी फल इसके विपरीत होता था। बवेरिया का

मैक्समिलान कैथोलिक लोगों का सेनापति था। १६२० में प्रेग स्थान पर कैथोलिक सेना ने प्रोटेस्टैण्टों को हरा दिया, और फ़्रेडरिक को नेदरलैंड भागना पड़ा। डेनमार्क तथा अन्यान्य राजा प्रोटेस्टैण्ट लोगों के पक्ष में खड़े हुए और संग्राम होता रहा। 'काउण्ट टिली' इस समय राजसेना की ओर से तैयार हुआ, और १६२२ में उसने मैन्सफ़ील्ड को पराजित किया। अलबर्ट वान वालेन्स्टीन भी राज-पक्ष पर लड़ने लगा। इस काल में यह सेना केवल प्रोटेस्टैण्ट लोगों के ही विरुद्ध न थी, किन्तु समस्त जर्मनी मेंबड़ा उपद्रव मचा रही थी। कैथोलिक लोगों ने जर्मन-राज से शान्ति की प्रार्थना की और यह भयङ्कर सेना तोड़ दी गई। अभी तक प्रोटेस्टैंट दल हारता रहा था। स्वेडेनराज 'गुस्टवस अडालफ़स' अब बड़ी भारी सेना लेकर प्रोटेस्टैंण्ट लोगो के लिए लड़ने को आया। इस सेना से राजसेनापति टिली को करारी हार मिली। स्वेडेनराज के साथ ७,००,००० मनुष्य थे। ये लोग जिधर निकल जाते सारे देश को नष्ट कर देते थे। इनका सामना करने को किसी का भी साहस नहीं पड़ता था। जर्मन-राज ने फिर उसी वालेन्स्टीन से सहायता माँगी। उसने राजा से अपना पूरा मतलब स्वीकार कराके एक बड़ी भारी सेना एकत्र करना आरंभ किया। दोनों में लड़ाई हुई और युद्ध में स्वेडेन राजा की मृत्यु हो जाने पर भी उसका पराक्रमी सेनापति शत्रुओं से लड़ता रहा. और अन्त में उसने वालेन्स्टीन की सेना के छक्के छुड़ा दिये। कपटी होने के कारण, वालेन्स्टीन को उसी के सैनिकों ने मार डाला।

अब फ़र्डीनेण्ड तृतीय ने बड़ी सेना एकत्र करके प्रोटेस्टैण्टों के विरुद्ध जा मैदान लिया और उन्हें हराया। लोग लड़ाई से बहुत ज्यादह व्याकुल हो गये थे। अतएव १६४८ में वेस्टफ़ेलिया की सन्धि से लड़ाई शान्त की गई। जर्मनी को इस युद्ध से बड़ो हानि हुई। जर्मनो का कुछ हिस्सा फ़्रांस और स्वेडेन के हाथ जाता रहा। हालैण्ड और स्विटज़रलैण्ड स्वाधीन हो गये। जर्मनी के दोतिहाई मनुष्य इस लड़ाई में मरे। सैकड़ों नगर तबाह हो गये और व्यापार को बड़ा आघात पहुँचा। राजा की शक्ति अब बहुत कम हो गई।

—:०:—

१६–लेओपल्ड प्रथम।

(१६५७—१७०५)

अब फ़र्डीनेंड तृतीय के पुत्र लेओपल्ड ने राज्यासन सुशोभित किया। सर्वप्रिय होते हुए भी यह निर्बल राजा था। जर्मन राजा को अयोग्य देख कर, फ़्रांस के राजा लुई १४ ने, अपनी राज्यसीमा बढ़ाने की आकांक्षा से उक्त सन्धिपत्र के १० वर्ष बाद लड़ाई आरम्भ की।

जर्मनी के रईस लोग इतने स्वार्थी हो रहे थे, कि वे स्वदेश-कल्याण को बिलकुल न खयाल करके अपने अपने मतलब में पड़े थे। कई रईस लोग फ़्रांस के लुई से जा मिले। कुछ कारणों से तुर्क लोगों ने भी चढ़ाई की, परन्तु इन्हें हारना पड़ा। जर्मनी को अपने अनेक नगर खोने पड़े। जर्मनी अब बड़ी शोचनीय दशा में

था। इस समय यदि पैलेटिनेट के निर्वाचक (Elector) और 'सेवाय' के राजकुमार यूजेन लेओपल्ड को सच्चे हृदय से सहायता न देते रहते, तो जर्मनी की दशा और भी बिगड़ जाती। पैलेटिनेट निर्वाचक इधर फ़्रांस की सेना से बड़ी वीरता के साथ लड़ रहे थे, और उधर वीर यूजेन तुर्क लोगों का सामना कर रहा था।

१७०१ में स्पेन के उत्तराधिकार का झगड़ा उठ खड़ा हुआ। स्पेन के राजा चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हो गई। इसके कोई सन्तान न थी। अतएव फ़्रांस राज लूई १४ वें, जर्मनी के लेओपल्ड, और बवेरिया के निर्वाचक जोज़ेफ़ फ़र्डीनेंड ने स्पेन राज्य के लिए दावा किया। परिणाम यह हुआ कि १३ वर्ष तक संग्राम हुआ। इँगलैंड, पोर्चुगल, और हालैंड के राजा, तथा हैनोवर और ब्रैंडेनबर्ग के निर्वाचक (जिसको जर्मन-महाराज ने प्रशिया के राजा की उपाधि दे रक्खी थी) जर्मन-महाराज के पक्ष में थे, और लूई १४वाँ तथा जोज़ेफ़ फ़र्डीनेंड दूसरी ओर थे। जर्मन और अँगरेज़ी सेना राजकुमार यूजेन और मार्लबरा के नेतृत्व में थी। इस सेना का संगठन बड़ा बढ़िया था। इसने आरम्भ से अन्त तक शत्रुदल को पराजित किया।

जर्मन सेना ने फ़्रांसवालों को ब्लेनहिम (१७०४) रैमिलीज़ (१७०६), ऊडेनार्ड (१७०८) और मालप्लेका (१७०९) में हराया। वारंवार पराजित होने के कारण संत्रस्त होकर लूई १४वें ने 'यूट्रे' की सन्धि से १७१३ में इस संग्राम को शान्त किया। फ़्रांस-राज का पोता फ़िलिप स्पेन का राजा हुआ। १७०५ में लेओपल्ड का देहान्त